माधवबिलास ॥

जिसमें

शृंगाररसान्तर्गत स्वकीया परकीया मध्या प्रगल्भादि अष्टनायका भेद उत्तमोत्तम कबियों के अनुप्रासस्से सुन्दर मधुर व ललित्य कबित्तों में नवीन रीति से बर्णितहै ॥

जिसको

श्रीरायबरेलीप्रदेशान्तर्गत मिश्रखेड़ा ग्रामनिवासि श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी ने रसिक पुरुषों के अनुरागार्थ व अवलोकनार्थ निर्मित किया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

अक्टूबर सन् १८८८ ई०

पहलीबार १५००

इसयन्त्रालय में जो काव्य की पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचेलिखीहैं

काव्य॥

नानार्थनवसंग्रहावली॥

पण्डित मातादीन शुक्क रचित सातपोथीका संग्रहहै (१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रससारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्तकृत पिंगल अक्षर बहुत पुष्टहैं कि वृद्ध और बालक भी पढ़ सक्तेहैं॥

कृष्णप्रिया॥

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलासकी तरहपर श्रीकृष्णजीका जन्मसे बैकुण्ठ गमन पर्य्यन्त चरित्रहै यह काव्यालंकार युक्त बहुतही सुन्दर पुस्तकहै॥

छन्दोर्णव पिंगल॥

जिसमें मात्रा वृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरुस्थापन रीति और सब छन्दोंके दृष्टांत सहित छपहैं॥

रसराज॥

मतिरामजी कविरचित जिसमें अति मनोहरता से काव्यालंकार संयुक्त नायका भेदका वर्णनहै॥

कविकुलकल्पतरु॥

भूषण चिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दोंमें नायकाभेद की पूरी बातें लिखीहैं॥

शतशयीसटीक बिहारीलालजी रचित॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पूर्ण नायका भेद का वर्णन सात सौ दोहोंमें है और दोहेके भावार्थ के सवैये और कवित्व भी हैं॥

सभाविलास॥

जिसमें सभाकी चातुरता के लिये चुनीहुई बातें जैसेनीति, पहेले काव्यकी बहुतसी बातें रागोंकेस्वरूप वर्णन कियेगयेहैं यह पुस्तक असंख्य होछपीहै और पाठशालाओंके प्रचारके योग्यहै॥



माधवविलास ॥



दोहा ॥

श्रीगणपतिकेचरणयुग शारदचरणमनाय ।
करोकृपा जनजानिकै दीजै ग्रन्थ बनाय ॥
बहुतकबिनकोमतोलै संग्रहकियोकबित्त ।
जाहिपढ़े आनंद अति होतिचतुरई चित्त ॥
लिखत आपनोबंश अरु ग्रामनामकुलजौन ।
तापीछे संग्रह लिखत पढ़ैंमुदितनर तौन ।

कबित्त ॥ अवधकोसूबा तीनिलोकमेंबिदिततहां राय कीबरेली जिलासुभगगनाइये । भागीरथी सातकोश दक्षिण बिराजैं जाके नामलेत पातक अनेकन वहाइये ॥ माधव कहत तहां ग्राममिश्रखेर बसै चारिउबरण निज निज मनभाइये । तहां ममबास ताके करत प्रकाश शम्भुशंकरकी आशसदा मन बच काइये १ प्रथम त्रिपाठी लालमणिभे बिदित जाके ताकेतनैरामदीन सबजग जानोहै । ताकेसुत द्वैभयेप्रसिद्ध बेचूलाल

जाको वैद्यनमें नामसब कोबिद बखानोहै ॥ माधवप्रसादभये दूसरे पढ़तभाषा व्याकरण ज्योतिषअनेकमन मानोहै । संग्रह कबित्त निजमति अनुसारकरि चूक क्षमैं कबिजन जाको यहबानोहै २ प्रथम गणेशजीके पुनि अम्मराजिनके चारि फिरि लिखेमाघ पंचमीबसन्तके । चारि लिखे फागुन के चारिही बसन्तऋतु चारि ऋतुग्रीषम के बरषा सुतन्तके ॥ माधव कहत चारि शरद बखानकीन्हे चारिही हिमन्त चारिशिशिरसुगन्तके । यहिबिधि षटऋतु करिके यकत्रजामें पढ़ैं सबकबि उर आनँद लसन्त के ३ सम्बत बखानौं शून्य वेद गृह लगन अरु भादोंकृष्णपक्ष अष्टमीको शुभ जानिकैं । संग्रह अरम्भकरो तादिन पढ़नकाज कबित्त अमित सतकबिनके आनिकैं ॥ माधव विलास नाम करिकैं प्रकाश याहि नवरस नायकादि दशहू बखानिकैं । आनँद बढ़ावनहै मोद उपजावनहै कबिमनभावनहैसुन्दर प्रमानिकैं ४ ॥ दोहा ॥ जिमिबरणोसबकबिनमिलि सकल नायका भेद । सोईरीति संग्रहकरत छांड़ि सकलचितखेद ॥ कबित्त गणेश ॥ बालकमृणालनि ज्यों तोड़िडारै सबकाल कठिन कराल वे अकालदीह दुःखको । बिपति हरतहठि पदमके पातसम पंकज्यों पताल पेलि पठवै कलुषको ॥ दूरिकै कलंकअंकभव शीशशशिसम राखतहै केशोदास दासकेबपुषको । सांकरेकी सांकरन सनमुख होतहीतै दशमुखमुखजोवैगज मुखमुखको १ एकई रदन गजबदन बिराजमान मदन

कदन सुत करन सोकामाको। कहै गिरिधारी गिरि-
राजनन्दिनीकोनन्द आनँदकोकंदजगवंदवरनामाको॥
गुगडादगडकुगडली कमगडलीकोमोहै मन भालचन्द
मगडली बिशाल गुणग्रामाको। ऐसे गणनायक के बु-
द्धिबरदायकके पांयबन्दि कहत चरित्र स्यामश्यामा
के २ सत्वसत्ययुगकोकि सत्यहीकि सत्यशुभ सिद्धि
की प्रसिद्धि कैधैां बुद्धिवृद्धि जानिये। ज्ञानहीकीगरि
माकी महिमा बिबेक की कि दरशनही को दरशन
उर आनिये॥ पुण्यको प्रकाश वेदविद्या को बिलास
कैधैां यशकोप्रकाश केशौदास उरआनिये। मदनक-
दनसुत बदन रदनकैसो बिघन बिनाशनकोबिधिपहिं-
चानिये ३ बारन बदनसोहै एकही रदनजाके सुखमा
सदन सोसहाय कर सत्यके। दारिद दहन सुरतरु को
गहनऐसो मूषक वहन बिदहन खलमतिके॥ सबसुख
सागर गुणागर उजागर है बुधिबर नागर देवैया
शुभगतिके। बिमलकरन ज्ञान ध्यानधरि शिवनाथ
संकट हरण ये चरण गणपतिके ४॥ कबित्तभगवती॥ बा-
नी जगरानीकी उदारता बखानीजाय ऐसीमति उदित
उदार कौनकी भई। देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज
तपबृद्धि कहिकहि हारे सब कहिना कहूं लई॥ भावी
भूत वर्त्तमान जगत बखानत है केशोदास कहैना बखा
निकाहूपैगई। भनैपति चारिमुख पूतभनैपांचमुख ना-
तीभनै षटमुख तदपि नईनई १ मलयज गाराकरैं ब-
सन सुधाराकरैं शुहिउरडाराकरैं लरैंमुकतानकी। पां-

वड़ेपसाराकरैं पंखाचौरढाराकरैं छाहैंबिस्ताराकरैं बिश
दबितानको॥ मुखको निहाराकरैं दुखकोबिसाराकरैं
मनसा इशाराकरैं सारा आँखियानकी। माणिकप्र-
दीपन सों थारा साजि ताराजूकी आरती उताराकरैं
दारा देवतानकी २ जहां अम्बु आसनवृषासन खगा-
सन गणेश शेश आसन सिंहासन तरेरहैं। तापर स्व-
रूपहै अनन्त ब्रह्म रूपराशिको चंद ह्वै बितान छांह
शीशपैं करे रहैं॥ श्रीपति सुजानकहै चरण शरणात
केचाकरसे द्वादश दिवाकर खड़ेरहैं। धनाधीशमन्दिर
के द्वारपै कलन्दर से बंदर से बाहर पुरंदर परे रहैं ३
तोहींको भजत देविवेदाविष्णु शंकरसो तोहींछीनदा
चरकेमुंड झटकतिहै। तोहींसुर रक्षक असुर वृंदभ-
क्षक सो तोहीं रक्त बीजको रुधिर घटकतिहै॥ शंकर
भनत एक तोहीं है प्रसिद्धजग तेरी शक्ति मनमेंन
काहू भटकतिहै। पालिनीसो भक्तजन दाहिनीसदाही
रहैशत्रुन बिपक्षकार दंडपटकतिहै ४ ॥ कबित्तबसंतपंचमी॥
आजुशुभमाघकी बसंतपंचमीहैप्रभु बंदीजनबोरदैअनंद
कोबढ़ायोहै। आजुहीते ढोलडफतालकी अवाजहोत
आजुहीते गारिनके राग सरसायोहै॥ माधव कहत
रंगलै गुलाल आजुहीते लोगन गलीन बीच कीचको
मचायो है। सुखद संयोगिन को दुखद बियोगिन
को पंचबाण आपनो अबलसरसायो है १ आजु ब्रज
नारी सब करिकै तयारी पैन्हिपीतपट सारी जरतारी
की सवारी है। नैनकजरारी आड़ मृगमदवारी बेंदी

भालछबि न्यारी मांग मोतिन की धारी है॥ माधव कहैरीमंजुबौर धरिथारीकर गहे पिचकारी लैगुलाल रंगवारीहै। जानिशुभकारी माघपंचमी बिचार किये उतसाहभारी नंदलालपैसिधारी है २ फरसबसंतीतामें तकियाबसंतीधरपर दाबसंती छति छाजत बसंती है। चीराहैबसंती अंगजामाहै बसंती कटिफेंटाहै बसंतीपद त्रानहूं बसंतीहै॥ गजराबसंती अंगरागहु बसंतीसबसा-जहु बसंती माधोकहत बसंतीहै। रागहै बसंती ताल बजतबसंती नंदलाल भे बसंती जानि पंचमीबसंतीहै ३ आजुहीते साजुऋतुराज की अनोखो भई आजुहीते ओखीभई नारी बिनकंतकी। आजुहीते आनँदबधाये देशदेशनमें आजुहीते गावैंनर रागिनीहसंतकी॥ आ जुहीते औरैरंग औरैराग औरैबाग बिहंग समाज औ रै ओरै भैांर पंतकी। होरी नव गोरी के मिलापकी बधाई लाय आई अदभुतआज पंचमी बसंतकी ४॥ फागबर्णन॥ खेलबेकोफागु देवदारासी उतरिआई दीरघ दृगन देखि लागतीन पलकैं। खुलत दुकूल भुजमूलदर शतबर उन्नत उरोजहार हीरनके हलकैं॥ बेनीकबिभू पर धरतपद मंदमंद आननके ऊपरअनूप छबि छलकैं। लाललाल रंगभरी यौबनतरंगभरी बालभरी आनँदगुला लभरीअलकैं १ एकैसंग धाय नंदलाल औगुलालदोऊ दृगनगयेरी उरआनँद बढ़ैनहीं। धोयधोयहारीपदमा-करतिहारी सैांह अबतो उपाय कछूचित्तमेंचढ़ैनहीं॥ कहांजाउं कैसीकरूं कौनसुनैकासों कहैां यतन बतावो

ज्ञाते दरद बढ़ैनहीं। एरीमेरी बीरजैसेतैसे इन आँखिन सों कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ैनहीं २ केसरि सुरं गहूके रंगमें रँगैगीआज औरगुरुलोगनकी लाज परि हेलिबो। गाइबो बजाइबोजू नाचिबो नचाइबो जू रस बशह्वैके हमसबी खेल खेलिबो॥ ठाकुर कहत और होनीतो लहैंगीबीर एक अनहोनी कहौ कौनी बिधि झेलिबो। कर कुच पेलिबो गरे में भुज मेलिबो जो ऐसी होरी खेलिबो तौ हमतौ न खेलिबो ३ आईफागु खेलिकैसुकेलिसुखसामुहे सों सुंदर सुघरीसों सनेहसर सावैहै। केसरिके रंगभीनी चूनरी सुरंगरंग अंगनअनं ग की तरंग दरशावै है। राजत अनोखो आधो बदन गुलालमढ़ो कहतकिशोरसों अनूपछबिछावैहै। अमल अभंग आछो युतउतसाह मानो अरुणाघटाते शशिनि- कसतआवैहै४॥ षटऋतुबर्णनबसंतऋतु॥ मधुमतवारेभारेमधु मधुगुंजरत देखि गुणीजन गीत गावत उमाहके। को- किलनकीबबोलें करतकलोलेंआगे पौनहरकालेआले छूटे चितचाहके॥ मोहनसोंकबिकहै शिशिर तगीरी कीन्हो वशाकरिलीन्होदेशरहेना उमाह के। यहजिय जानुमानु करु ना गुमानुआलीडेरा परे बागन बसंतबाद शाहके १ भौंरनके पुंजआगे गुंजरत कुंजरसे कोकिल नकीबसों कुहुकिउठिधायेहै। किंशुक निशानसे लसत आसमानछ्वैछ्वैबोरबरछीनसों अधिकरूपछायेहै॥ मोहनसोंकविकाम कारीगर कोपकरि त्रिविधसमीर सोई सुरंगचलायेहै॥ माननी गनीमनकेमानगढ़ तोड़िवे

कोसकलसमाजसोंबसंतराज आयेहै १शीशिरनगीरी करिआनँद अमीरी पाय कीन्हो पतिझारदफतर सब रद्दीहै। बिरहपुरामें निज अमल लिखायलीन्हो हरे हरेचातुरीसों चौहदचौहद्दीहै॥ कोकिलनकीबनबीथ द्दनकी बद्दी बंदि गैंदनकी गिलमें गुलाबनकीगद्दीहै। भेंटलै मिलौरी आलीटूटिगो गुमानगढ़ काम बादशाह के बसंतसुतसद्दीहै ३ डारद्रुमबागन बिछौना बनापल्लव को सुमन झँगूला सोहैछबि तनभारीदै। पवनझुलावै केकीकीरबतलावै देवकोकिल हँसावैहुलसावैकरतारी दै। उड़तपराग सो उतारोकरै राईनोन कंजकलीनाय-कालतान शिरतारीदै॥ मदनमहीपजूको बालकबसंत ताहि प्रातही खेलावत गुलाबचटकारीदै ४॥ ग्रीष्मऋतु वर्णन॥ जेठकी जलनि जलै मृगजल हलै तैसे पौनचलै ज्वालिम जलाकनके जारेसे। कहैगिरिधारी जीवजंतु तेअनंत तेवै जहांतहां छपेसबै तपे भौनभारेसे॥ अन्दरन नृपतिबिपति परीबंदरन रहेदति दंदरन सरपसंहारेसे। मंदरन सिंदुर मदांधधूपधंधरनकंदरन कोलभील कलहैं कलहारेसे १ तपतप्रचंड मारतंड महिमंडल में ग्रीषमको तीग्रनि तपनिवारापारहैं। कहै गिरिधारी कीचकांचसीदहनलागीभयेनदीनदनीरअदहनधारहैं॥ झपटैं चहूंघासी लपटैं लपेटैं लूक फनीकीसी फूक पौन भूकनकी झारहैं॥ अवांसी अटारीतपी तवासी अवनि महा दावासे महल औ पजावासे पहारहैं२ तेज सरसानेभानुभूगिरिधिकानेभूरिधूरिकेउड़ानेदिगधुंधुरि

दिखाने हैं। पौनके झझाने झूक आगि जनुसाने बनझाड़ झरसाने सर सकलसुखानेहैं॥ कोलकहलाने सबजीव अकुलाने अति आतप अघाने भाजि छांहन छपाने हैं। अंदर दुराने तहखाने खसखाने लोग मून कबिताने इमिग्रीषमबखानेहैं ३ सूखेसर सरितासनाका सिंधुबेलालग तीर्थनिधिकानो धराभूधरबखाने और। शाखनमें शाखामृग शकुन ससेटेसमदंती मतवारे जारे अनि लझकोराझोर॥ कहेंअवधेश कैसे बीतत बियोगिनकी दावानल दौरधौं बिलोक्यो मीशाई छकोर। कहलमचीहै कोल कच्छपककोदरलौंउष्णारसमजूकी उष्णारसमैंबढ़ीहैंजोर ४॥ वर्षाॠतुबर्णन॥ मूंदिडारु झांझरे झरोखेद्वार नाबदानपवन न आवैमेरो दरदबटावोरी। जेते आसपास बागबने हैं सुगंधनके तेते अबजाय जरा मूरतें कटावोरी॥ बेनीकबिकहै जोकलापिनसों राखा चहौ पापी पपिहाको यहि देशते हटावोरी। पिया गुणगानगावो नसुनावो शोर मोरन की घटा ना दिखा वो बेगिआंगन पटावोरी १ कैधौं बिषधर खाई मीच आई मोरनको भूतल प्रकटपरी कीचहू नईनई। कैधौं दौरि दादुर गयेदबि दरारनमें पापीपपिहाकी चोंच पावक दहीदई॥ घासीराम बाक बक बाजनीको त्रास मानि कैधौं वहिदेश बीर पावस ठईनई। कैधौं काम प्रयासजू के अंगते निकारिगयो जूझिगयो मेघ कैधौं बीजुरी सतीभई २ कैधौं वहि देश में हमेश बरसत मेह कैधौं निजदेश बेश बादर निसरिगो। कैधौं बक

दादुरन दामिनी दिखाईदेत कैधैं पिक चातक मयूर गरपरिगो ॥ कैधैं हैनकागद कलमकी रवैयेउहांकैधैं शिवगुलामजू धवैये कहूंधरिगो । कैधैं उन गावन में सावन सुहावनना कैधैं मनभावनको आवन बिसरिगो३ लगी सो लगाय लंक लोयन खराबकरो मारिकरी मोरन अहार मारजारेको । सुकबि निहाल इनआंगु- रिन मूंदिमूंदि सुनिहैं। न घोरघोर झिल्लीझनकारेको। भेखनकी भीर सहसानन समेटिडारो मेटिडारो गरब गरूर घनकारेको । जालसों जकरि कहूं पावों जोपक रिपंख फोहाफोहा करों या पपीहा दईमारेको ४ ॥
शरदऋतुवर्णन ॥ ॥ फूले आस पास कास बिमल अकासभ- यो रही न निशानी कहूं महिमें गरदकी । गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि बिरहाफ रदकी ॥ श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन क छूना उपाय मेरोजयके दरदकी । हरद समान तनजरद भयोरी मोहिं गरद करत चारु चांदनी शरदकी १ ॥ शरद प्रकास भई पावसकी आसगई कातिक के मास जूह वारिद बिलात है । आस पास कास गुलाबास बृन्द फूले देखि सेज पै करेजे शूलहोत रैनिजात है ॥ ऐसही बियामें कंत आयकै पुकार्यो द्वार सुनिकै अवाजभयो हर्षयुत गातहै । सुधि बुधि छांडीदौरि खोलतकिवांड़ी व्रज सांवरे बिहारी मिलि प्यारी मुसकात है २ अमल अकाश उदै कुम्भज सितारे तारेतारे पति तैसी प्रभा सक ल सिहातेहैं ॥ सलिलसुखाने बीथी विमल पयानेसाह

उदिततउछाह तुगतम्बू तरताते हैं । कहैअवधेश शोभा विशादविलोकि भूमिखंजनदेखाने यातेशरद सुहातेहैं कहूं कहूंविहत बलाहक बिलानलागे पदुमपरागलैलै अनिलउड़ातेहैं ३ कासभयो कानन में कछुकविकास योग स्वाती आस चातक बिषादकछू नास भयो । नास भयोमृग दुखजन हरदासकहैं आनंद चकोरनको चोरन आसभयो ॥ आसभयो गरदशरद की अवाई जानि नीलआस खंजनको नगर निवास भयो । वासभयो सुखद सुवासको जलज मध्य कुंभजको प्रकट अकासमें प्रकास भयो ॥ ४ हिमऋतु वर्णन ॥ आछी अति कोठरी सवांरी सेजसाधे सन आस पास भीतर कपूर बगरे रहैं । द्वार परे परदे गलीचन सों ढांपीभूमि जरैदीप दीपन सोआनंद भरे रहैं ॥ ताही समय कंत संग युवती हेमंत ऋतु पौढ़े पलका पै दोऊ आनँद भरे रहैं । शीत दुखद पटे सनेह सुखचपटे सो लपटे दुशालन में छपटे परेरहैं १ रावटी रँगीली पैरँगीलै दीपदान दीपै दावैदोह परदेसखूरी छिति छाईहै । कहै अवधेश तैसी फरस गलीचनकी आले आले सकल दुशालन सजाई है ॥ उचउर मंडनकी प्रमदा प्रमोदै कास सीरोअंग राग जासों उठै उष्णाई है । ठांव ठांव हौजभरे हलकैं हसानन के हरष हमेशा होत हिमऋतु आई है २ काले तनवाले मीन वालेमणिलालेकंठ कालेकर कौलते विशालेछबि वालेरी । आले बनमाले जनपाले बलशाले खलघाले रस ढाले सो कसाले निपटा लेरी ॥ पाले हिमवाले सों ब-

चाले मनवाले बाल शाले औ दुशालेउरमालेसों उठा-
लेरी। आंगी खसकाले मणिमाले को उठाले ब्रजबाले
नंदलालको हियाले लपटालेरी ३ अगरकी धूपमृग
मदकी सुगन्धवर बसन विशाल जाल अंग ढांकियतु
है। कहै पदमाकर सुपौनको न गौन जहां ऐसे भौन
उमँगि उमंग छाकियतु है॥ भोग औ सँयोग हित सु-
ऋतु हे संतहीमें येते और सुखद सुहायेबांकियतु है।
तानकी तरंग तरुणापन तरणीतेज तेल तूलतरुणात
सालताकि यतुहै ४ शिशिरऋतु वर्णन॥ बारियां महलकी
नहलकी मुंदीहै जहां रासैपरसलकी अँगीठियांअनल
की। जोतैंमीम भलकी चिगौरैहै नकुलकी जोप्यालि
यां अमलकी पलँगौ मखमलकी॥ ग्वालकबि थलकी
लचीली लंकबलकी वो फूल समहलकी प्रभासैं झला
झलकी। बिपरीत ललकी कहैको बात कलकी सा
वालै छबि छलकी दुशालेमें उछलकी १ आड़नारहत
रूमठाढ़ेहो रहत सदा पश्चिमकी पाय पौन पालासों
फटतुहै। कांपत करेज सेज सोइबो सुखद कहा गरम
गवांरकी गरूरता घटतुहै॥ बेनीकबिकहै पांयपानीके
परसहोत पीरसी उठतनेम नाहीं निपटतु है। ओढ़िये
दुशाला तरे तोशक बिशाल। बिनालागे अंगबाला
शीतकाला ना कटतुहै २ दरदर झांपै और थरथर हांपै
तऊ थरथ्कांपै अंगबजत बतीसीजाय। फेरि मखतूलन
के चोहरेगलीचनपै सेजमखमली साहै सोऊ शरदोसी
जाय।ग्वालकबिकहै मृगमदके धुकायेधूम बरतअंगी-

ढीतामें आगिहछपीसीजाय॥ ढाके सुरासीसी आनि सीसीसी मिटैगी औलैं कुच उकसीसी छाती छाती सोंन मीसीजाय ३ नारीबिन होतनर नारी बिन होत नर शीतसियरात उरलाये पयोधरमें। बेनीकवि शीत लससीरकी सनाका सुनि सांझहीते सोवत कपाट दै सदनमें॥ पक्षीपर जोरेरहै फूलफल थोरेरहै पालाको प्रकासआस पास धरातलमें। बसन लपेटेरहै तऊजानु पेटेरहैशिशिर ससेटेरहै लेटेरहै घरमें ४ अथ षट्अंगवर्णन॥ प्रथमपदवर्णन॥ गंगाजीके जलमध्य कंठकेप्रमाणपैठि जपि जपि सूर मंत्र आनंद बढ़ावही। केशोदास घामजल शीतसहैएकरस ठाढ़ेएकपांय कोटिकलपैं नशावही॥ कोमलअमलभये सुंदर सुबास भये कमल निवास मन यदपि भ्रमावही। पायो वरु ब्रह्मपद पदमिनी पदमिनी तेरेपद पदवीकोपद पैन पावही १ मंदहू चपतइंदु बधुके बरण होतप्यारी के चरण नवनीत हूते नरमैं। सहज ललाई बरणी न जाय काशीराम चुईसी परत छबियाते मति भरमैं॥ येरी ठकुराइनि की नाइन गहत जब ईंगुरसों रंगदोरि जात दरवरमैं। दियो है कि दीबहै बिचारि शोचै बारबार बावरीसी होरही महावरी लै करमैं २ बिम्ब में प्रबाल में न ईंगुर गुलालमें न जपा पुहुपमाल में नकिन चित निहारे मैं। दाड़िम प्रसूनमें नसून धरासूनमें न इंद्रकी बधूनमें न गुंज आँधियारेमैं॥ हैकुसुम्भारंगमेंन किंशुक पतंगमेंन जावकमजीठ कंज पुंजवारि डारेमैं। राधिका तिहारे पग

अरुणा समताको हेरिहारे कबितान पावत बिचारे मैं३ जगमगे जावक जगीले जरबीले कैधैं ऊपरतेभूपर प्रभाकर प्रभालची। गरदबिहीन कैधैं शरदसरोजपुंज कैधैं छवि छायेसे बनाये बिधिलालची॥ शौनकबि कहैरंगरतिके हरोलकैधैं निकसे निवेरिगति गतिके विशालची। तरुणातिहारे पग जगमग होतकैधैं जग के जलूससैनभगके मसालची १॥ अथकटिवर्णन॥ कोऊ कहैकैधैंतत्त्व चारिके चुकेपैले अकाशहीसों कीन्हें चतुरानन चकरिहै। कोऊकहै कौनो छलहन्दहै कहत कोऊ बिधने बनावत बिसारेउ हरबरिहै॥ तेरोईसो तनतोही जानैना जनेउकोसो भेऊपायो महीहै गोबिं दमन धरिहै। नाभिमन करणी तरंगिणी त्रिबलिकुच शम्भुलग पायेकै सुकृति पाई करिहै १ उन्नत उरोजन को भारबेशुमार कौन करत बिचारपार बिगतअसार मैं। नजरि न आयोध्यान धीरज लगावैं गहे अंकहू न पावै कहूं कामकेबिहारमें॥ शौनकबि कहै तिथिबार औलगन जैसे प्रकटन होत बिन ज्योतिष निहारमें। ब्रह्मके स्वरूपते महीन कटितेरी येरीहांकरे किना करैं सोना परै बिचारमें २ भूतकी मिठाई जैसी सांचे को झुंठाई जैसी स्यारकी ढिठाई जैसी छीन छहरतु है।धीरकैसोह ंसकेशोदासदास जैसोसुख शूरकैसी शंक अंक रंक कैसो वितुहै॥ सूमकैसो दानमति मूढ कैसो ज्ञान गोरीगोर कैसो मान मेरेजान समुदितु है। कौने है सवाँरी वृषभानकी कुमारीप्यारी तेरीकटि निपट

कपटकैसो हितुहै ३ येरीवृषभानकी कुमारी तवकटि
लखि ध्यानमेंनआवै अति सूक्षम बिसालहै। कैधौंहर
बरमें बनावतबिसरो बिधिकैधौं जोरिदीन्हो जनुतार
लै कि वालहै॥ माधव कहत करपरसते जान्योजात
ऐनकलगायेलखिपरै कछुहालहै। सत्यहैकि झूंठहैकि
नाहींहैकिहैधौं कछुजादूहै किमंत्रहैकि तंत्र इन्द्रजाल
है ४ अथकुचबर्णन॥ कैसेरति रानीके सेंधौरेकहै श्रीपति
जू जैसे कलधौतके सरूरुह सवाँरेहैं। कैसे कलधौतके
सरोरुह सवाँरेकहै जैसेरूप नटके बटासे छबिधारेहैं॥
कैसेरूप नटके बटासे छबिधारेकहे जैसेकाम भूपतिके
उलटेनगारेहैं। कैसेकाम भूपतिके उलटे नगारेकहेजैसे
प्राणप्यारी कुच उन्नत तिहारेहैं १ कनक अनारदो
तयारकरि कारीगरभरिकै शृँगार रसबंदनहींकीनो
है। पायकै सुबास कैधौंलखि गुरुदास मनो कंजकी
कलिन पै मधुपबास लीनो है॥ कैधौं शम्भु अस्थिर
ह्वै बैठेहैं मर्वाचिह्वैके शीशन पै जटाजूट सोहत नवी
नोहै। प्यारी के कुचनपर काम खेलवारीमनो टोना
डीठ लगिबे को स्याही धरि दीनोहै २ कूजे कंद कि-
न्दुक से वालेगज कुम्भ कुम्भ सम्पुट सराहिकेते वारि
वारि डारेहैं। चंद्रमुखी उरके उरोजनकी ओ पलखि
चक्रवाक श्रीफल सकुचि हियहारे हैं॥ कहै शिव-
गुलाम चोखे नोखे नये नीरज से औंधि ये नगारे नये
नारंगी निहारे हैं। सुभग सलोने अनुहारि हर होने
लोने सोनेके अनारसे निहारि निरधारे हैं ३॥ कोक

कोक नदसे नगारे निहारियतु भारे भानमती केबटासे बरदरसे। कन्दकैसे कूजे तरबूजे नारँगीसे चारु सम्पुट सेवालेसे अनारश्रीफलसे ॥ कहै गिरिधारी प्राणप्यारीके उरोजदोऊरूप कैसीराशि महामोहनीके घरसे। गागरिसे गेंदसे गुरुज गजकुम्भजसे गुम्बजसेगुच्छसे गिरीशगिरिवरसे ॥ अथमुखबर्णनम् ॥ कोमलता कंजसे गुलाबते सुगन्ध लैके चन्द्रते प्रकाश सोतो उदितउजेरोहै। रसलै रसाननसों नीर निरवाननसों चातुरीसुजाननसों कौतुक निबेरोहै ॥ ठाकुर सोकबिया मसालो बिधि कारीगर रचना रचनहारो और सब चेरोहै। कुन्दन को रंगलै सवादुलै सुधाको बसुधाको सुखलूटिके बनायो मुखतेरोहै १ ॥ एककहै अमल कमल मुखसीताजूको एककहै चन्दमुख आनँदको कन्दरी। होयजो कमलतौतो रैनिहीमें सकुचैरी चन्द जोती बासरमें द्युति होय मन्दरी ॥ बासरहू कमल रजनीहीमें मुखचन्द बासरहू रजनी बिराजै जगबन्दरी। देखो मुखभावना न देखाई कमलचन्द ताते मुखमुखै सखि कमलैन चन्दरी २ मृगनकी मीननकी चंचलाई नखनमें हीरनकी मोतिनकी ज्योतिहै रदनमें। आई है सिसिटिके मिठाई सब ओठनमें ऊंखमें न दाखमें न स्वाद सरदूनमें ॥ महाकबि बालमके खुलेहैं बिशालभाल रातिउ दिन राजत मसालसी सदन में। बिधनै गुलाबकैसो अरकउतारि मानों चन्द्रकी निकाई राखि प्यारीके बदन में ३ ॥ भृकुटीतनीको नकबेसरि बनीकोलट नागिनि फनीको

लखि कंजफूल फीकोहै। मैनकी मनीकोनैन बान की अनीकोबैन चोखेरस नीकोहौस हुलसनहीकोहै॥ रूप रमनीको कहा रमारमनीको गजगति गमनीको सिंह जीवन सोजीको है। बेंदीबन्दनीको मन्दहासफन्दनी-कोमुख चन्दहूतेनीको वृषभान नन्दनीको है ४॥

अथ नेत्रवर्णनम्॥ ऐसेमैनतीके हैं न और जगतीके पैनरके हू गनीकेहैं न देखे हरनीके हैं। नाहीं नैनपीके बरलसैं पन्नगीकेमन मैनकाज नीकेनैन बानहू अनीके हैं॥ उ-पमा नफीके बर सुखमा घनीके हमदेखे हैं नवीके मन मोहन भनीके हैं। मीन हैं न ठीके खंजरीटहू कहीके भोर पंकजहूते नीके नैन गोप नन्दनीके हैं १ सान धरी सुन्दर कृपानसी कही न जात बानहूते बेधक बि-शेष दरशावती। कैदके कटाक्षनसों किम्मति करन की हिम्मति हजारनकी हरष हरावती॥ भौनकवि कहैचारु चिकनी चवाइन में चंचल चलाक चोटऔ-चक बचावती। ऐसी अनियारी अँखियान में अंजन आंजि आंगुरी अजब वै अटाक बचि आवती २ भृ कुटी चढ़ीके योधा मैनकी गढ़ीकेसौति दोयक दढ़ीके रंग करत रदीसे हैं। भोगात कबिन्द्र चन्द्रमाकी ओर चाहकरि उपमा चकोर मति पावत कदीसे हैं॥ को-कनद मुद्रित मलीने मृगसीनेमीन खंजननवीने हेरिहारे तेहदीसेहैं। ईशके अशीसपै कमानके कशीसे मैनमदके मदीसे नैन तेरेसेनदीसे हैं ३॥ एकइ झपाके में छपाके मनमोहैदृग ऐसे मारुमाके ना रमाके ना उमा के हैं।

हैं। दशहूदिशा के मनसाके फल देनहारे करन निशा
के ईशि ताके अब काके हैं॥ झापके जहांकेतहां मीन
जल ढांकेगये हरिन हरीनहांके कवल कहांके हैं। सद
नसमाके सुखमाके उपमाके चारु चंचल चलांके नैन
बांके राधिकांके हैं ४॥ अथ केशवर्णनम्॥ श्रीपति सेवार
कैसे सोहत शृङ्गार जैसे सोहत शृङ्गार कैसे जैसे तम
धारहैं। तमनकी धारकैसे मरकतसार जैसेमरकतसार
कैसेजैसेघनभारहैं॥ घननके भारकैसे मोरपखवार जैसे
मोरपखवार कैसे जैसे अलिहार हैं। अलिनके हारकैसे
पन्नग कुमार जैसे पन्नग कुमारकैसे जैसे तेरेबार हैं १
तमतम तामसरसादिपद तोयदसी नीलक जटामपाट
जटि प्रजटीसी है। पजन प्रकन्दरप दीपक शिखासी
चारु हाटक फटिक ओप चटकि फटीसीहै॥ कचकुच
दुबिच विचित्रक्षतबक्रवेश छूटी लटपाटी घटतट उप
टीसी है। विरह अशुभपक्ष तीतन प्रदोषपाय पन्नगी
पिनाकी पदपूजि पलटीसी है २ सुन्दर सजीले पर
लव्वसहजीले राधेपरमलजीले शुभ कजन कजीले हैं।
बेलिनबसीले अलिऔलिन हँसीले रूपयश में यशीले
आदि रस मेंरसीले हैं॥ नेहपरशीले परनेह सरशीले
अननैन चमकीले चहकीले चटकीले हैं। तेरेकच नीले
छूटि छबिसों छबीले मानो पन्नग नगीले मैं मन्त्रवत
कीले हैं ३ पीठितन ताकतही डीठि डसिलेत आली
फैलिकै विरहविष रोमरोम धावतो। क्षणक में ऐसे
हाल होतेना कितेकनके कोऊ येते गाडुरी कहांते ढूं

ढ़िलावतो॥ ईश्वर दोहाई कहूं होतो वाकी व्यालि नी तौ काली के नथैया कान्ह कांहे को कहावतो। मुरि मुसक्यानि मंत्र जानती न राधे जोतौ बेनीकेउसन ब्रजबसन न पावतो ४॥ अथ शृंगाररसवर्णनम्॥ चरण क मल तन सरस कुसुमरंग चम्पा के बरण तन गंधजुही जेनहै। नारंगीसी संडी औ उरोज बने श्रीफलसे बिम्ब से अधर दंत दाड़िम बिजैनहै॥ अलि केसो केशरंग कीरकैसी नासिका है कंठतो कपोत केसो कोकिला के बैनहै। गति गजराज कैसी कटि मृगराजकैसी हा यकैसो घूंघुट हरिन कैसे नैन है १ चम्पक कली सी खिली अली अवलीमें वृषभानकी गली में चलीजात पंथ पेखीमैं॥ कामअवलासी कलाधरकी कलासी ल वलासीलिये कनक लतासी अवरेखी मैं। शिवलाल ताखिन ते आंखिन ते वाकी चालु टरत न टारे चारु हंसकी बिशेखीमैं। छबि तनुजासो छबि दीपके उ जासी पंचबान के धुजासी सिंधुजासी जात देखीमें २ बानी कहिये तो वह बीनाको लियेई रहै गौरी तो गिरीश अरधांग में लगाई है। कमलान कान्हकेहि येते उतरत अरु रम्भामें तो येती नहीं रूप अधिकाई है॥ रति कहियेतौ अति प्रौढ़ा अबहीं है अरु यामें तो अजौंलग कछुक लरिकाई है। फेरि फेरि बेरल गि हेरि हेरि हार्यो नृप जानि ना परति यह कोहै कहां आई है ३ केशरि को गारुलै शिंगारुनाशिंगारु ना बिगारु देह दीपति मनोहर मसालकी। ऐसे कस

नीको लगै अमल अमोल तन खुलीशोभा सहज अनूप
रूप जालकी ॥ कहै गिरिधारी श्याम सारिहो सँवारे
सक्र बार नेक अनेकछबि भूषणा बिशालकी। मातु
करै आली वह मृग मदवाली आड़ सौति मदगंजनीहै
अंजनी गोपालकी ४ ॥ अथ संयोग शृंगार वर्णनम् ॥ अतर
लजात मृग मद पछितात जात वारिजात हारिजात
सौरभ सतत है । श्रीपति अगार में अगर उदगार
ऐसी डगर बगर छबि छाजत अनन्तहै ॥ हीकरनसुख
मुख सौतिन ससी करन बदन जसीकरन जीकरनयंत्र
है। पति सों रसीकरन रतिको हँसीकरन सीकरन
प्यारी को वसीकरन मंत्रहै १ चन्द्रद्युति मन्दभई
फंदमें फँसीहैं आनि ननद करैगी शोरछोड़ि गलबाहं
दै। सासु सतरैं है जेठ पतिनी रिसै है वंकबचन सुनैहै
अरे जोरि युगपाणिदै ॥ नौलौहै गिनती औ बिनती
हहालौ देव कियो कहा चाहत रहनि कुलकानिदै।
दानदेरे जानको निदान निर्दई कान्ह बसी सारी रैनि
मोहिं अब घरजानदै २ कुन्दकी कलीसी दंत पंक्तिकौ
मुदीसी दीसी बीचबीचमोसीरेखअसीसी गरकिजात।
बोरीस्योंरचीसी बिरचीसी तिरछीसी लखैरीसोआँखि
याकैसफरीसी वे फरकिजात ॥ रसकी नदीसी दया
निधिको नदीसी थाह चकित अरीसी रति डरीसी स
रकिजात। प्यौफँद फँसीसी ऐसी होतिजो कसीसी
ताकेसीसीकरबे में सुधासीसीसीढरकिजात ३ सोयेसब
लोग तुम आये भले योग मेटो बिरहबियोग उरआनँद

लपटकै। काहूकोन डरो परयंक मिलि परी परिरंभ प्यारे पारौंतुम्हैं कैसे कोऊ हटकै॥ लीलाधर पीतपट न्यारोकरि धरो बनमाल परिहरो जामें नेकहू न अट कै। देहरीकी वा तरफ केहरि ननदपरी येहरि सँभा रू पग जेहरि न खटकै ४॥ अथ वियोगशृंगार वर्णनम्॥ ऊब तहैं। डूबतहैं। डगतहैं। डोलतहैं। बोलत न काहे प्रीति रीति न रितै चलै। कहै पदमाकर त्यों उससि उसास ऐसों आँसू वै अपार आय आँखिन इतैचलै॥ औधि हीके आगम लौं रहत बनेतौरहौ बीचही क्योंबैरीबन्धु वेदन बितैचलै। येरे मेरे प्राण कान्हप्यारेके चलाच लमैं तबतौ चले न अब चाहत चितैचलै १ प्राण प्या रोगेहते पयानकरि गयो आली मानो मेरीदेहते पयान प्रानकरिगे। कहै गिरिधारी तबहींते सुधि बुधि गई आनँद बिनोदनके मन्दिर उजरिगे॥ जाकेअंगलागि लूट्यो असितअनंगसुख अंगते बिरहज्वाल जालन से जरिगे। जासों कबौं अंतर न हारनके परेहाय तासों अब अंतर पहारन के परिगे २ श्याम श्याम सघन बिराजैंघनचारोंओर· कौंधा बहुतरल गगनबीच छ- हरै। दादुर औ मोर चहूं ओरनते शोरकरैं मडीमहि मराडलमें महाजल लहरै॥ प्रीतमप्रवास तासों दाहत वियोगी बाल कीन्होंजु अनंगजोर बैठी अटाकहरै। छिनकमैं पौढ़ै छिन बैठै परयंकपर छिनक में करै हाय हाय उठि टहरै ३ आई सुधिपीतम की भूली सुधि और सब कौन समुझावैना सहेलीकोऊसाथमैं।

अतिही दुचित्त चित्त लाये सूने सदन में बैठी प्यारी धरिकै बदन एक हाथमें ॥ चित्रकैसी लिखीनेक डोलति न बोलति न बिरह की मोटधरि दीन्हीं बिधि माथमें। सुनत न बात सूनेहोगये सकलगात बैठीध्यान कीन्हें मन दीन्हें प्राणनाथ में ४ ॥ अथहास्यरस वर्णनम् ॥ हँसी हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बरको पाहुनी जे आवैं हिमाचलके उछाह में। कहै पदमाकर सुकाहू सों कहै को कहा जोई जहां देखै सोहँसेई तहां राह में॥ मगनभयेई हँसै नगन महेश ठाढ़े औरै हँसैं येऊ हँसाहाँसिके उछाह में। शीशपर गंगाहँसै भुजन भुजंगा हँसै हाँसिहीको दंगाभयो नंगाके विवाह में॥ अंबर लै सबके कदम्ब चढ़ि बैठेजाय हास्यरसमाहीं कबौं नाहीं कबौं हां करै। कहै गिरिधारी नीचे खड़ी ब्रज नारी सब अंगन उघारी बनवारीसों हहाकरै ॥ हाथ जोरि करौं दिननाथ को नमस्कार कहै ब्रजनाथ तौजू तुम्हरोकहाकरै। बिना रवि बंदनन देहैदोऊकरजोरि बंदन करौतौ देय बसन बिदाकरै२ कहा कहौं नाथ कलिकालको जितैहैंनहीं जानिये कितैहैंनेक सुनतनहां करी।कविशिवलालदोषदीजै कौनन्यावबिन हाथपांव होकैजिनकाठकोभगाकरी। बिनडेरकीन्हेंमहापातक अनेकहम घातक यमनहूंतेलगी औलगाकरी। पावन पतित झूठीकीरति सुनायतेरी हायमेरो बेदन पुरानन दगाकरी ३ लक्षण तिहारे तौ प्रतक्षण लखैपरै बड़े२ रूमलखि लाखमेंन दुरतो। सांपबैलबाघ बियराखमूढ़

बांधेफिरौ गंगको प्रवाहहेरि हुबइतेभुरतो ॥ घासी रामसुकवि देवइया हरहोते कहां चंदजातो सिकिल न सको रंगघुरतो। गौरिजोनहोती अरधंगमेंगिरीश कीसो सांचीसुनौ भूतनाथ खयबेको न जुरतो ४॥ अथ करुणारसलिख्यते॥ आंसुन अन्हाय हायहायकै कहत सब औध पुरबासीके कहायो दुख दाइये। कहैपदमाकर जलुस युवराजीको सुऐसोकोधनीहै जायजाके शीश बांहिये॥ सुतकेपयानदशरथनेतजे जोप्रानबाढ़योशोक सिंधुसो कहांलौंऔगाहिये। मूढ़मंथराकेकहे बनको जो भजेराम ऐसी यहबात केकयीकोतौ न चाहिये १ अक्रूर गोहन चलत मनमोहनके बसुधा बिछोहन के बीजनको बोवती। कहैंगिरिधारी धीरधारिननाधारी धीर करुणा गंभीर ब्रजमंडलबिगोवती॥ नंदकी यशो मतिकीगोपनकी गोपिनकी बिपति बखानै कौन आं सुनसों धोवती। चोखतीनलया चाराचरती न गैया मिलि जलकीगरैया औचिरैया बनरोवती २ कदम की डालीचढ़िकूद औबनमाली कोपिकालीदहभीतर बियोगबीज व्वैगयो। कहैंगिरिधारीधायेनगरकेनारी नर भईभीर भारी नीरनैननतेच्वैगयो॥ नन्द नँदरानी अररानीपरें पानीबीच ओकओक अररस शोकबीज व्वैगयो। यमुनासमानो आजु ब्रजको सतन हाय यशु मति सूनबिन सूनब्रजह्वैगयो ३ कामरीपरीहै कहूं ल- कुटीडरीहै कहूं बांसुरीधरीहै अब इन्हें कौनधरिहै। कहैं गिरिधारी कोरचैगो रसरासके न बिरचिबिलास

वृन्दावन में विहरिहै ॥ यशुमतिरानी दीन वानीसों कहत आजु गोरसके काज कौन मोसोंआनि अरिहै। संग ग्वालबालन के खेलि है को ख्यालनको लालन बिनारी गोपालनकोकरिहै ४॥ अथपुनःकरुणारस ॥ ग्राह गहे गजको अगाधै जल लियेजात त्राहि त्राहि भाषत भोभूरिभरेडरते। धायके गोविन्दआय फन्दते निफन्द कीन्हों दीन्हेंावाहबारनैसे काढ़िलीन्होंसरते॥ चन्दि काप्रसादजू बिचारकरैंदेवसब देख्योहम आवतनाभूमि धौंअधरते। वारितेमुरारि कैधौंकढ़ेग्राह आननते कंज तेनिकरि कैधौंआयेकरीकरते १ उठे कोपिकाले प्रल यकालवाले धाराधर गुराडादराड धारेलगे धारैचहूं ओर पर। कहैं गिरिधारी अकुलाने ब्रजबासी सब पाहि पाहि आरत पुकारते निहोरपर॥ मोरपंखवारे रख वारे ब्रज गाइनके तोबिना न कोऊ रखवारो यहिठौर पर। छोभकरि छोहनीते उठायलीन्हों छोनीधर छा यदीन्हों छत्रसों छगुनियांके छोरपर २ गौवैंग्वाल बाल अहिगालमें समानेजाय जानतनहुते ख्याल खल बल जूटको। कहैं गिरिधारी पीछे रहिगे अकेलेका न्ह करुणा निधान धरे करुणात्रिकूट को॥ देवकी नँदन चलि बदन अघासुरके पैठेआय पैठतही कीन्हों यह ऊटको। शैलके समानबढ़े फैलमेंफुलायोतन फू लिकै पानीको फन फाटिगयो फूटको ३ जानिपरी आनिकै अवाज कान्हजूके कान जानिजन आपनो अनाथकी पुकारथो। छोड़्यो सिंहासनऔ छांड़्यो

पन्नगासन औ छोड़यो गरुड़ासन सो धायो परमार थो ॥ नन्दन सों कविप्यारी कमला अकेली छांड़ि हाथन हथ्यार छोड़ो छोड़ो रथ सारथी । धाये ब्रज राज गजराजकी अरजजानि आयेचलि वाहीके मनो रथ महारथी ४ ॥ अथ रौद्ररसबर्णनम् ॥ बारि टारिडारों कुम्भकर्णहि बिदारिडारौं मारौं मेघनादै आजु जो बल अनन्तहौं । कहैं पदमाकर त्रिकूटहिको ढाहिडा-रौं डारत करेई यातुधानन को अंतहौं ॥ अच्छहिनिर च्छकपिरुच्छह्वैउचारौं इमि तोसे तिच्छ तुच्छनको कछूवैन गंतहौं । जारिडारौंलंकहि उजारिडारौं उप बन फारिडारौं रावनको तोमैं हनुमन्तहौं १ मारिडा रौं अनुज समेत यहिखेत आजु मेटिडारौं दीरघ बचन निजगुरुको । सीतानाथ सीतासाथ बैठेदेखो छत्रतर यहि सुखसाखों शोक सबहीके उरको ॥ केशोदास सबिलास बिषबिषे वासहोय केकयीके अंगअंग शोक पुत्रज्वरको । रघुराजजूको राज सकलछिड़ाइलेउँ भर तहिं आजु राजदेउँ प्रेत पुरको २ गोपिन सों कहत गोपाल दानदीन्हेंबिन जाननहिंपैहौ करौ केती उबरे सीको । कहैं गिरिधारी राजडेरहि सुनाय कहा मोहिं डरपावतिहौ डरत न ऐसीको ॥ जाके बल बिक्रम को तुमको गुमान ताको पलमेंमिटाऊं बलबिक्रमकी वेसी को । मातहि पछारिडारौं फारिडारौं मुष्टिकहि मारि डारौं कंसहि संहारिडारौं केसीको ३ प्यारो रामचन्द्र को अनैरो दूत कोप्योबीर जासोंबल बाजीलागा प्रभु

के प्रमानकी। भनै भगिवंत लागी रावनै उदासी सब देवन सुधासी हांकहोत हनुमानकी॥ पूंछमें न आंच लागो बाढ़िकै अकाश लागी आगिलागी देखिभागी भीर यातुधानकी। मयसुता शंकलागी प्रियादौरिअं-कलागी लंकलागी जरन जुड़ानलागी जानकी ४॥

अथ बीररस बर्णनम्॥ चरिओरसमुद विहदनदहदकीन्हें दुरघट ओटकोट पाय पुरपरके। कठिन करालकाल दराडते बिशालबली कोटिन कृपानगहे बीर निशिच रके॥ सहज अशंकबंक रहत निशंकसदा बरणौ कहां लौं कबिनन्द बरहरके। बैन कपिबरके सुनतहियहर के सोफरके उदराड भुजदराड रघुबर के १ सोहै अस्त्र वोड़े जेनछोड़े शीश संगरके लंगर लँगूर उचउचके उ तंकामैं। कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत फैलत फुलात फाल बांधत फलंका मैं॥ आगे रघुबीर के स मीरकेतनैके संग तारीदै तड़ाक तड़ातड़के तमंका मैं। शंकादै दशाननको हंकादै सुबंकाबीर डंकादै बिजैको कपि कूदिपरे लंका मैं २ डहडहे डंकन के शबद निशं कसुनि बहबहे शत्रुन के सैना आनि खरके। कबि हरिकेश इत चम्पतिकोलाल चढ्यो उतै तुरकान दल उमड़ि घुमड़िके॥ हाथीको उमडमाडूरायकी घुमड़त्यों त्यों लाली उघरत मुखछत्रशाल बरके। फरकिफरकि उठैभुजा अस्त्र वाहिवेको करकि करकि उठै कर ब खतरके ३ दौड़ेकालकिंकर करालकरतारी देत दौरी कालीकिलकत सुधाके तरंगते। कहैं हरिकेश दांतपी

सत खबीसदौरे दौरे मराडरीक गीध गीदर उमंडते ॥ बी रज़यसिंह जंग ज़ालिम सुकौनपर फरकाई भुज औ चढ़ाई भौहँभंगते । भंगडारि मुखते भुजंगडारि भुजते हरषि हर दौरे गौरी डारि अरधंगते ४॥ अथ भयानकरस लिख्यते ॥ पूरि रह्यो पातकमें कलही कुचालीकूर का याभई कष्टित मलीन तनधारे को । देखि यमसौंहैं यमु नाकोलियो नामउन होत अन्तकाल नन्दलाल रूपधा रेको ॥ ग्वालकबि त्योंही यमभाख्यो हाय हाय करि कोऊ ज़नि जाऊ जो गयेतो मारिडारे को । दूरिकरि देगो दीह रौरवन मूंदिकरि चूरकरिदेगो अँग अखि ल हमारेको १ झलकत आवैझुंड झीलम झलानिझा प्यो तमकत आवैतेग वाही औ सिलाही है । कहैं पद माकर त्यों दुंदुभी धुकारसुनि अकबकबोलै योंगनीम औ गुनाहीहै ॥ माधव को लाल कालहूते बिकराल साजि धायो सैनयेदई दईधौं कहा चाहीहै । कौनको कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु कापै यों परैया भयो गजब इलाही है २ अति बिललानी यातुधानीक है गेहगेह रावन समान आन दूसरो अयानको । काहेते न बूझेउ आंखि बीसहू ना सूझेउजाको मूढ़मतिक्रोही द्रोहीभयो भगवान को ॥ सुकबि सुवंसकहै आनि ज गदम्बै लैकै निपट निशंकै बंश नाश्यो यातुधान को । कार्ढीकोश कला कूदिबलाके समान परै रावण मह लापर हल्ला हनुमान को ३ माड़व उज्जैन भानि भूयन वहेलसेलौं सिंगलसरोज लौं परावने परत है । गौड़

वाने तिलगाने करनाटक फिरंगाने हफसाने हिम्मति की हद्द हहरत है॥ साहू के सपूत शिवराज शमशेर तेरी धुनि गढ़पती गढ़धीरना धरतहै। बीजापूरगोल कुणडा आगरे दिलीकेबीच बाजेबाजे दिन दरवाजे उघरत है ४॥ अथ बिभत्सरस वर्णनम्॥ नटकी समान मरकटभट भालुबहु दैत्यनके युत्थबीच चटचट चटकत। मारे खड्ग खूनन के घायबोलें भकभक योगिनी जमाति लोलू घटघटघटकत॥ सुकबि सुबंश कहै गिरे गीध झुणडनसों रुणडन समेत मुणड गटगटगटकत। तइपि तइपि तहां पौनतनय महाबीर असुर बिलन्दमहि पटपटपटकत १ कोपि नन्दजूके भट असुरअनन्तनको मारि गजदन्तन बिदारि देहदई है। कहै गिरिधारी एकपरे अंगभंग एके परेहैं अपंग क्षिति घायल न छई है॥ मुष्टिक चाणूरको है कहूं कंस कूरको है औरको गनावै युत्थयुत्थनकी सईहै। औणित सुरंग तासों होरही सुरंगभूमि रंगभूमि आजु रणरंग भूमि भईहै २ औझरीकी झोरीकन्धे अन्तनकी सेली बंधे मुणडन कमणडल खप्परकियो फोरिकै। योगिनी जमाति जोरि झुणडबने तापसे तीरतीर बैठेहैं समरसरि खोरिकै॥ औणितसों सानिसानि गदासतुवासे खात एकैएक पीवतबहोरि घोरिघोरिकै। तुलसी बैताल भत साथलिये भूतनाथ हेरिहेरि हँसत शिवासों हाथ जोरिकै ३ औणित सलिलबर बानर सलिलचर गिरि बालिसुत बिष बिभीषण डारेहैं। चमर पताका बड़ी

बाड़वा अनलक्षम रोगरिपु जामवन्त केशवविचारेहैं॥ बाजिसुर बाजि सुरगजसे अनेकराज भरत सबन्धु इन्दु अमृत निहारे है। सोहत सहितशेष रामचन्द्र कुशलव जीतिकै समर सिन्धु सांचेही सिधारे है ४॥ अथ अद्भुत रसवर्णनम्॥ सातदिन सातराति करि उतपातमहा मारुत झकोरै तरुतोरै दीहदुखमैं। कहैंपदमाकर करीत्योंधूम धारनहूं एतेपै न कान्ह कहूं आयो रोषरुखमैं॥ छोरि छिगुनेकेछत्र ऐसो गिरि छायराख्यो ताकेतरेगाय गोपगोपी खरी सुखमैं। देखिदेखि मेघनकी सैन अकुलानीरहै सिन्धु में न पानी औ न पानी इन्द्रमुख में १ माटीखात मोहनको पायो कहूं मातुगहि सांटीडरपायो प्रीति परिपाटी टारिकै। कहै गिरिधारी मुख देखतही देखिपरे देखे अनदेखे सबलोक निरधारिकै॥ खम्भालागि शोचत अचम्भासानि छोहरेको अद्भुतरंग भरे कौतुक निहारिकै। यशुमति चापिरही रसनारद न नँदनन्दन दिखायो जबबदन पसारिकै २ यमतेडराय गृहलोगन छिपाय एक बूडोजाय पापीगंगरोगनकेदंगाते। ताहीक्षण छूटिगयो पापसों पवित्रभयो सुखनके योग लाल तरलतरंगाते॥ धाय आपधनद बिमानलै प्रथमनन्दी धाई आठौसिधिधाय धारके प्रसंगाते। भंगभरे मुखमें भुजंगधरे अंगवह गंगधरे शीशपै निकसि आयोगंगाते ३ गोरीगारबीली जाको गमन गयंदकोसो गरे मुकताहलको गजरा निरालावह। कज्जल कलित दृग ललितलोनाई भरे बलित उरोजनमें मृगमदआला

वह ॥ ग्वालकबि रविजा तिहारेतीरन्हाई आई धाई लेनदेवनकी अवलि बिशालावह। शीशादीप मृगये पहुँचिपहिलेईगये पाछे श्याम रूपह्वै सिधारी नवबा लावह ४ ॥ अथ शांतिरसवर्णनम् ॥ दामिनी दशन चारुचंदसो बदन देखि कामिनी मदनमोह मायामेंनफंदैरे। सुतके सुता के बनिताके ममताके हेत धायधाय थाके अब छांडु फरफंदैरे ॥ ध्याउ रघुनंदै करिदूरि दुखदंदै सुख सम्पति अनंदै ह्वैहै कीरति बलंदैरे। येरेमतिमंद सब छांडु छलछंदै सक आनँदके कंदै रामचंदै क्योंनबंदैरे १ पापसोंगढ़ीहै हाड़चामसों मढ़ी है तैसेनरक कढ़ीमहा अशुद्ध भावभोंड़ीहै। मज्जामांस मूत्रबीठरोम औरुधिर भरी कफपित्तवातके बिकार गड़ गोड़ीहै ॥ तापैकाम मोहमदलोभसें ग्रसितसदा सबकाल काहू बिधिकुमति न छोड़ीहै। कहै हरदासहै भजनकृत शुद्धनाते निपट निकामदेह निलज निगोड़ीहै २ नातीपूत नातगोतइष्ट मित्रभाई बंधु ठौर ठौर भावनजू ठगिसे खरेरहैं। शाल औ दुशालजाल नानामणि मुक्तमाल भूषण अनूपबैस दूषण भरेरहैं ॥ कांधेचले चारिहीके बांधेरहैं हाथी घोड़ पालकी पलंगपीठ ऊंटहूपरेरहैं। कर्मिबिटभस्म भये जितने बड़े औ छोटे प्राणगे अगोटि धनकोटिन धरेरहैं ३ भूषन बसन बीस रतन अनेकजाति घोड़ेपील पालकी अनूप छबिधामकी। कहा नरनाह कहाभये बादशाहकहा शाहनकेशाह जौनदेहै परिनामकी ॥ देनीकबिकहै ख्यालफालमें बितावैदिन पालैखलख्यालै

कैपरवाले जसचामकी। मनहीकी मनरहिजातींअभि लाखैं जब मूंदिगई आंखैं तबलाखैं केहिकामकी ४ अथदशनायकावर्णनम् ॥ दोहा ॥ प्रोषित पतिका खंडिताकल हंतरितानाम॥बिप्रलुब्ध उतकंठिताबासकशय्याबाम १ स्वाअधीन पतिका कहत अभिसारिका बखानि ॥ बहुरि प्रवासित प्रेवसी आगतपतिका जानि २ कहौ अवस्था भेदयुत दशौ नायकानाम॥ तिनके लक्षण लक्षिसब बरणाकहौ अभिराम ३ ॥ अथप्रोषितपतिका ॥ दोहा ॥ बालमबसतबिदेशमें जोबियोग अकुलाय। प्रो षितपतिका नायका ताहिकहत कबिराय १॥ कबित ॥ आलीमोहिं लागतहै वाबिन खलकखाली कबौं मुक ताली के बिभूषण करैनहीं। कहै गिरिधारी कलपरत न केहूनेकु पलकापरेहूंकल पलकपरैनहीं॥ रैनदिन घेरेघर रहत घनेरेलोग लाखनकी मौजवारे आंखन अरैनहीं। रहत बसाई परदेशवारो प्यारो वह हियरे हमारेते बिसारे बिसरैनहीं १ लागत बसंतके सुपाती लिखीपीतमको प्यारीपरबीनहै हमारीसुधिआनवी। कहैपदमाकर यहांकोयों हवाल बिरहानलकीज्वाल सों दवानल ते मानवी॥ ऊबकी उसासनको पूरो पर गासा सोतो निपटउसास पौनहूंते पहिचानवी। नैनन कोढंगसोअनंग पिचकारिनते गातनको रंगपीरेपातन तेजानवो २ बिरह तिहारेलाल बिकलभईहैबाल नींद भूखप्यास सिगरी बिसारियतुहै। चोरीकैसीबातचंद्र माहँते छिपाइयतु बसननतानिकै बयारिवारियतुहै ॥

कहैमतिराम कलाधरकीसी कलाछिन जोवन बिही न सीनसी निहारयतुहै। बारबार सुकुमार फूलनकी मालऐसी मारकै मरोरनि मरोर मारियतुहै ३ आयो ऋतुपावस न आयोपति प्राणप्यारो मेघन बरजु आली गरजि सुनावैना। दादुरन डपटु न बकि बकि फोरैं कान चात्रक बरज अबपीव रटिलावैना॥ बिरहा बिथा में मैंतो ब्याकुल परीहैंदेव जुगुनूहुस कि चित चिनगी चलावैना। कोकिला न गावैं मोर शोरना मचावै घन घुमड़िनधावै जौलौं श्यामघर आवैना ४॥ अथ खंडिता॥दोहा॥ आन तियारतिचिह्नधरि आवैपिय परभात। दुखमंडित सोखंडिता बरणतकविअवदात॥ कवित्त॥ बैठीपरयंक पैनवेली निरशंकजहां जागी ज्योतिजाहिर जवाहिरकी जागेज्यों। कहैं पदमाकर कहूं ते नंदनंदन हूं औचकही आये अलसाये प्रेम पागेयों॥ झपकीहै पलक पियाकेपीकलीक लखि झुकि झहराय हूं ननेकु अनुरागे त्यों। वैसही मयंक मुखी लगत नअंकहुती देखिकै कलंक अब येरी अंकलागे क्यों १ जावक लिलार ओठ अंजनकी लीकसोहै पांयन अलीक लोक लीकना बिसारिये। कविमति राम छाती नखछत जगमगे डगमगे पगसूधे मगमें न धारिये॥ कसकै उघारतही पलकपलकयाते पलका में पौढ़िश्रमरतिको निवारिये। लटपटे पेंचशिरबात न कहतबनै अटपटेपेंच शिरपागके सुधारिये २ ओढ़न में काजर लगाये काहूं कामिनीको भामिनीके भौन

आये गजरके बाजते। कहै गिरिधारी सेदपानी सहि जानी लखि नागरि सयानी वा रिसानी ब्रजराजते॥ भौंहन भँवाय अनखाय रिसपायबकैं बैठी मनभायेतेन वाये नैनलाजते। चेरिया न करौ ये चरित्र तिरियाके लाल क्रियानकरौ भलीबेरिया बिराजते ३ पीतम प्रभात अलसात आये रोषभरे प्यारी कछुरोष भरे बचन उचारोना। कहै गिरिधारी उठि आदर अदाब कियो बोली मृदुमंद मुसकाय मनुमारोना॥ यद्यपि सुभावनसौं मिली मनभावनसौं नाहको गुनाह तिया तद्यपि न्यधारयोना। मानिनीके जीको मानजानिगो सुजानजब करत बिहार हार उरते उतारयोना ४॥ अथ कलहंतरिता॥ दोहा॥ पहिले पियसों कलहकरि करय जो पुनि पछिताव। कलहंतरिता कहतहैं जेजानत रस भाव१॥ कबित्त॥ जाकेकाजबोरयो कुलकानिकोजहा जअरुजाके काज लोकलाज सकल बहायेरी। जाके काजहांसी अंगरेजी ब्रजबासिन की जाकेकाज नांव कुलिगांवमें धरायेरी॥ कहै गिरिधारी जाकेकाजकी न्योंयेतो आजुतासोंहौं रिसानीछकरह्यो मनभायेरी। सरबस आपनो दयबरबस लीन्हों हायतौन लालहाय ते गँवारिहैं गँवायेरी १ झालरनदार झुकिभूमति बितानबिछे गहबगलीचा अरु गुलगुलीगिलमें। जगर मगर पदमाकर सुदीपनिकी फैली जगज्योति केलि मंदिर अखिल में॥ आवत तहांई मनमोहन को लाज मैन जैसीकछुकरी तैसीदिलहीकी दिलमें। हेरि हेरि

बिलमैंनलीन्हों हिलमिलमैं रहीहैं। हाय मिलमैं प्रभा
केझिलमिलमैं २ ससकि ससकि हियो कसकि कस-
कि उठैताके आप सोतननाकाढ़ो भौनकोनेसों। एक
तानलागे मुकतानके अनेकहार कबसे दराज काजरूपे
सोनसोनेसों॥ भनत कबीन्द्र ऐसेनाहसों गुनाह बिन
कियोहै बिगार धारटारै कौन टोनेसों। येरी मेरी
कुमतिते कलह करायेअब सुलह करावैं कौन सांवरे
सलोनेसों ३ बिनतीकरोरीकैं निहोरी करजोरीकर
हाहाकै महान मनुहारी अनुसरी है। घूंघट उघारयो
हौनने मुकनिहारयो वह रूठिउठि गयोधैं। अनैसी कै-
सीघरीहै॥ कहैं गिरधारी मो मनाव न रहोरी अबवा-
हीके मनावन की मेरेउर अरीहै। आपते मनाय बीर
लालको बुलायलाव लालकी बलायलौंटि मेरेशिर प-
रीहै ४॥अथबिप्रलुब्ध्वा॥ दोहा॥ ब्याकुलहोयबियोगसों सुनु
पियहोयनभेट। बिप्रलुब्ध्वातासोंकहत सूनीलखैं सहेट
कबित॥ खेलको बहानोकैं सहेलिनके संगचली आई
केलि मन्दिरलैां सुंदर मजेजपर। कहैं पदमाकर तहां
न पियपायोतिय त्योंहीं तनतैरही तमीपतिके तेजपर॥
बाढ़त बिथाकी कथा काहूसों कछू न कही लचकि
लतालैां गई लाजहीके लेजपर। बीरीपरी बिथरि क-
पोलपर पीरीपरी घीरीपरी घायगिरी सीरीपरी सेज
पर १ प्यारकरि जीमें प्रान प्यारेके मिलापहेत आई
कुंज मंदिर प्रकाश चंद आधेके। आस पास आली
लिये अगर गुलाबपास भूषन बसन साजि सुखमास-

साधेके॥ भौनकबि कहैं सुनों देखिकै सुखायगई कहै ना हवाल कछु काम अंगदाबेके। दाहि गई देहबिथा लाजते न कहिगई रहिगई बीरी अधखात हाथ राधे के २ सकल शृँगार साजि संगलै सहेलिनिको सुंदरी मिलन चली आनँदकेकंदको। कबि मतिराम बाल करति मनोरथनि पेख्यो परजंक मैंनप्यारे नंदनंदको नेहते लगीहै देह दारुण दहनगेह बागके बिलोकि द्रुमबलिन केवृन्द को॥ चंदको हंसत तब आयो मु- ख चंद्र अब चंद्र लाग्यो हंसन तियाके मुख चंदको ३ लोगनकी चोरी बनकुंजन किशोरी गई लाग्यो हिय होरी हूं नदीख्यो घनश्याम है॥ कहैं गिरधारी अं- ग अंगन अनंग हन्यो संगको जनीसों मतराय बोली बामहै। बदेनासहेटमोहिं बादिही बोलाय लाई बिना बन माली इहांखाली परयौ धाम है॥ खाये की अ- कूती किधौं तेरीमति धूती आजु दूती तैंकियोरी यूती मारनको कामहै ४॥ अथ उतकंठः॥ दोहा॥ जोतिय पियके मिलनको अति उतकंठित होय॥ताहि कहत उतकंठिता कबि कोबिद सबकोय॥ कबित्त॥ सौतिन के त्रासते र- हेधौं औरबासते न आये कौन गासते प्यो करुतो त- लासतै। कहै पदमाकर सुबासते जवासते सुफूलनको रासतै जगीहै महा सासतै॥ चांदनी बिकासते सुधा- कर प्रकासते न राखतहुलासतै न लावखस खासतै। पवनकरु आसतै न जाउ उठि पासतै अरी गुलाब पा- सते उठाव आस पासते १ यमुनाके तीर बहै शीतल स-

सीर जहां मधुकर मधुर करत मंद शोर है। कबि स-
तिराम तहां छबिसों छबीली बैठी अंगनते फैलतिसु-
गंध की झकोरहै॥ पीतम बिहारी के निहारिबेको
बातऐसी चहूंवोर दीरघ दृगनि करी दौरहै। येक
वोर मीन मनो येकवोर कंजपुंज येकवोर खंजन चको-
र येकवोरहै २ सारी दरदावन किनारीदार साजि
प्यारी मदन मनोरथके द्योत बितवतिहै। कहै गि-
रिधारी निशि चन्दउजियारी चारुनिज मुख चन्दकी
उजारी जितवतिहै॥ डगर निहारत बिहारीजू तिहा-
री ऐसे चंचलदृगन मृगमद कृतवतिहै। यमुना तटीमें
बैठिकै यकघटीतेंछतपरी चटपटी चहुंवोर चितवति
है ३ बैठी रंग रावटी निहारीमैं पियाकोबाट आये न
बिहारी भई निपट अधीरमैं। देवकीनन्दन कहै श्याम
घटाघेरिआई देखिगति प्रलयकी डरानी बलबीरमैं॥
सेज मैं सदाशिवकी सूरति बनाय पूजी तीन डेरतीनि
हूंकी कीन्ही ततबीर मैं। पाखनमैं सांवरो सुलाखन
अखैबट ताखनमैं लखनकी लिखी तसवीरमैं ४॥
अथ वासक शय्या॥ दोहा॥ मनभावन मो सेजमें ऐहैं आजु
बिशेखि। सजैसेय भूषण बसन वासक सज्या लेखि॥
कबित॥ सोरह सिंगार कै नबेलीके सहेलिन हूं कीन्ही
केलि मंदिर में कल्पित केरेहैं। कहै पदमाकर सुपा-
सही गुलाब पास खासे खसखास खसबोइनके ढेरेहैं।
त्यों गुलाब नीरन सों हीरनके हौज़भरे दंपति मिलाप
हित अरती उजेरेहैं॥ चोखी चांदनीन पर चौसर च-

मेलिन के चंदनकी चौकी चारुचांदीके चंगेरेहैं १ केस-
रि कनक जहां चम्पक बरग्रा कहां दामिनीयो दुरि
जात देहकी दमकते। कबि मतिराम लोने लोचन ल-
पटि लाज अरुण कपोल कामतेजकी तमकते॥ पग
के धरत कल किंकिनि नेवर बाजै बिछिया झमकउ-
ठै येकही झमकते। नाह सुख चाहि चितयोंचकहंस-
ति चौंकि परै चन्द मुखी निज चौंककी चमकते २
बेसरि बिराजै राजै केसरिको अंगराग नखतसे फूले
मांग मोतीबड़े वीजके। कहैंगिरिधारी रतिमंदिर मो-
हारे लगु आसपास फैलत फुहारे छबि फोजके॥ सेज
रंग मैं जपे सलोनी साजिवैसी आजु साजे साजमंजु
लन सरस सरोजके। लाजभरे लोचन बिलोकत
पियाकोसखु मनमन करत मनोरथमनोजके ३सासुको
कोहाय नंद ताहूसों रहीरिसाय जेठोहू सोऐंठी अति
ऐसी गतिवाहीहै। देवरसों नेवर पुहावैकेमिसहिरूठी
दासीसों अंगूठीकी उदासी चित चाहीहैभनत कबीन्द्र
बाल बसककीरजनी मैं सजनीसुबास पास राखी मह
महीहै॥ पैली और गैलीनाहीं आवनकी कैली ताहि
कोठरी अँध्यारीमैंअकेली सोइ रहीहै ४॥ अथस्वाअधीन
पतिका॥ दोहा॥ स्वअधीन पतिकाकहति पीतम जासु अ-
धीन। देखिरूप गुनशीलशुभमोहे श्यामप्रवीन॥ कबित्त॥
पीजिये सदाई रूपरावरेको आंखिनपै कीजियेकहाजू
लोकलाजकरिबोपरै। मेरेहेतरह्यो घरघेरै घनश्याममो
हिबोलतबिलोकतहँसत डारिबोपरै॥ कहैगिरिधारीक-

हूं लोगचरचैंगे तौ रचैंगे परपंच यातेह्यांते टरिबोपरै। लालअब जावचलिजायगो चवावह्यांतौ गोकुलमैंफूंकि फूंकि पांव धरिबोपरै१ चाहभरयो चंचल हमारोचित्त नौल बधूतेरी चाल चंचल चितौनमें बसतहै। कहैपद माकर सुचंचल चितौनहूंते औझकउझकि झझकनि में फँसतुहै॥ औझक उझक झझकनिते सुरभि बेश बांहीकी गहनि माहिंआय बिलसतुहै बांहीकी गहनि ते सुनाहींकी कहनिआयो नाहींकी कहनिते सुनाहीं निकसतुहै२ पुरबधू परबधू तिनसो न जोरडीठि तेरी वोरहेरे हेरियत हरबरसों। कंतवै हमारे परदेशमें बि- तायोद्यौस बीतैंकैसे पलपल बीतत पहरसों॥ धन्यतेरो भागभटू भावतोतिहारो न्यारोतेरेरंग राच्योतजैघरिको न घरसें। सौतिजन सालतीको सालसो तिहारे बस लालह्वै रहोहै मालतीको मधुकरसों ३ जादिनतेनौल बधू आई गौनहाई वह तादिनते लालन कहाधैं मन ऊटीहै। रात्योदिन बदन निहारत रहततासु तजत न सदन बड़ोई प्रीतिजूटीहै॥ ढारतहै चौर औ सुधारत अलक खुली खलकै बिहाय लाह गोपिन की छूटी है। मोह्यो बनमाली अलीकीजिये उपायकहा कैसी वा बधूटी डारि दीन्ही कौनबूटी है ४॥ अथअभिसारिका॥

दोहा॥साजि सकल भूषन बसन जाय जो पीतमपास। ताहि कहत अभिसारिका जेकबि बुद्धिविलास॥कबित्त॥

मौलश्री मंजुलकी गुंजनकि कुंजनको मोसो घनश्याम कहिकामकी कथैगयो। कहै पदमाकर अथाइनको

तजि तजि गोपगन निजनिज गेहके पथैगयो॥ शोचं
मतिकीजै ठकुरानी हमजानी चितचंचलतिहारो चढ़ि
चाहके रथैगये। छीनन छपाकर छपाकर मुखीतुचलु
बदन छपाकर छपाकर अथैगये।१ अंगनमें चंदनचढ़ा-
य घनसार सेतसारी क्षीरफेन ऐसीआभा उफनातहै।
राजत रुचिर शुचि मोतिनके आभरन कुसुम कलित
केश शोभा सरसातहै॥ कबिमति रामप्राग प्यारेको
मिलन चली करिकै मनोरथ न मृदुमुसक्यातहै। पोति
ना लखाई निशिचंद्रकी उज्यारी मुखचंद्रकी उज्यारी
तनछाहैं छपिजातहै२ सकल शरीर चारु चंदनबलित
कियोकेशनमें कलितललित मालतीकली। कहैंगिरि-
धारीहै सवांरी सेतसारी तैसी सोहत किनारी सेत सेत
मुकतावली॥ निकसी छबीली क्षीर सागर तरंग ऐसी
अंगअंग आजुउफनात आभाउज्वली। जामिनीजोन्हाई
में सुकामिनी जोन्हाईसम मिलिकै जोन्हाईमें कन्हाई
केमिलैचली ३ उमड़ि घुमड़ि घनघोरके घमंडकीन्ह्यों
निशिअंधियारी कारी सूझत न पंथको। प्यारीबन-
मालीपै सिधारी बनवाही सांझसालै पंचबानपंचबान
केनिखंगको॥ अहिरह्यो पांवगहिपांवरह्यो अहिगहि
कौतुक बखानैकोन बिषमभुवंगको। लीन्हेलोहलंगर
ज्यों सांकरसमेत छूट्योजातहै मतंगमानो नृपतिअनंग
को ४॥ अथप्रबत्स्यतप्रेयसी॥ दोहा॥ सुनैजवानी कंतकी जो
अतिव्याकुलहोय। ताहिप्रबत्स्यत प्रेयसी कहतसुकबि
सबकोय॥ कबित्त॥ लालन तुम्हारो परदेशको चलन

सुनिपलन प्रियाके जलकन भरियतुहै। कहैंगिरिधारी नईप्यारी पियरायगई गहिगहि गोदबीच नारीवारियतुहै ॥ मोहन जू ऐसो चकचोहट बढ़ायचले मीठको दिखाय जैसेईंट मारियतुहै। कौनवहरीति कौनप्रीति सिखीप्यारे लाल कालिहलाये गौन आजुगौन करियतुहै १ कसुकुच कंचुकी सोबिरचु बिमलहार मालतीकेफूल येधरेई कुम्हिलायगे। गारुगोरी चंदनसंवारु अंग आभरन दीपक उचारुतम छिति परछायगे॥बार धूप अगर अगारधूप बैठीकहा आजु अमरेश तेरेबदलि सुभायगे। आईसांझ सरस सोहाईसेज साजुयह कहत सुवाके आहुआके नैन आयगे २ सौदिनको मारगतहांको बेगिमांगी बिदा प्यारे पदमाकर प्रभातरातिबीते पर। सोसुनि पियारी पिया आगम बराइबेको आसुन अन्हाय बोली आसन हसीतेपर ॥ बालम बिदेशतुम जातहो तौ जावपर सांची कहिजाव कबऐहौ भवन रीतेपर। पहरके भीतरकैं दुपहर भीतरकैं तीसरे पहर कैंधैं सांझही बितीतेपर ३ मोहनललाको सुन्योचलत बिदेशभयो बाल मोहनीको चित निपट उचाटमें ।परी तलबेली तन मनमें छबीलीराखै छतिपर छिनकु छिन कुपांव बाटमें॥ पीतम नयन कुवलायनको चंदभयो घरीमें चलैगो मतिराम जेहि घाट में। नागरी नवेली रूपआगरी अकेली रीती गागरी लैठाढ़ी भई घाट ही के बाटमें ४॥ अथ आगन पतिका ॥ दोहा ॥ जातिय को परदेशते पीतम आयो होय। आगन पति का नायका

ताहि कहत सब कोय॥ कबित॥ आयो परदेश ते सु-
हायो अति वाको चित्त मोदभरी मूरति बिलोकि
ब्रज भूपकी। कहैं गिरिधारी फूल मालिकासीफूली
फबि औरे छबि जालिकामैं बालिका अनूपकी॥ उक-
स्यो उरोज अरु बिकस्यो सरोजमुख ओज आई
आंखिन मनोज महबूबकी। लाली भई तनमें खुसाली
भई मनमें सोसाली भई बिरह बहाली भई रूपकी १
आजु दिन कान्ह आगमन के बधाये सुनि छाये मग
फूलन स्वहाये थल थलके। कहैं पदमाकरत्यों आरती
उतारिबेको थारनमें दीप हार हीरन के छलके॥ कंच-
नके कलश भराये भूरिपन्नन के तानेतुंग तोरन तहांई
झला झलके। पौरिके दुवारते लगाय केलि मंदिर लौं
पदमिनिपांवड़े पसारे मखमलके २ नागर बिदेशमें बि
ताय बहुद्यौस आये नागरिके हियमें हुलास निसिया-
नकी। कबि मतिराम अंक भरत मयंक मुखी नेहै स
रसाय रही मति सुखदानकी॥ सुबरन बोलके बतावत
हैं सुबरन होरेंनिजलावतहै छबिमुसक्यान की। आं-
खिन ते आनँदके आंसू उमगाय प्यारी प्यारेको दे-
खावत सुरति मुक्तानकी ३ लटकत आजुलट मुखपरबा-
रबार आनँद उमँगि भरि हियेजिय थरकत। मरकत
भूषन बसन चारुपै धनको परकत मनतनु रुचि सुचि
ररकत॥ छरकत अंगअंग अंगन उछाह लोने ठरकत
ऐसो रूप अंगनते अरकत। सारी सिरसरकतचूराक-
रकरकत आंगिअंग दरकत आंखि बांई फरकत ४

अथस्वकीयानायकालिख्यते॥ दोहा ॥शील सुधाई सुभगता सलज सुलक्षणलक्ष। गुणअनेक सुक्रियानमें पतिसेवामेंदक्ष॥

कवित्त ॥कोरनिलौं हेरनि औहंसनि कपोलनलौंबोलनि मधुर अधरानिमें लगीरहै। उमड़े सकोच शील शोभा मढ़ेंबड़े नयन लाजबड़े लोगनकी जियमेंजगीरहै॥ कहै गिरिधारी गुणगूधी साधु सूधीसोहै कुलके बिशालकी उमंग उमगीरहै। सूमहिये नेम जो बढ़ाइबेको हेमपिया प्रेमकेबढ़ाइबेकोपंथत्योंपगीरहै१शोभित स्वकीय गन गुन गनतीमें तहां तेरेनामहोंकी एकरेखा रेखियतुहै। कहैपदमाकर पगीयें पतिप्रेमहीमें पदमिनितोसेंतिया तुही पेखियतुहै॥ सुबरण रूपजैसो तैसोशील सौरभहै याहीसों तिहारोतन धन्य लेखियतुहै। सोनेमें सुगंधना सुगंधमें सुन्योनसो सोनोऔ सुगंधतोमेंदोनोंदेखियतुहै२ दीपसम दीपति उदीपति अनूपति जरूपके स्वरूप रति रूपहिहरतिहै। कहैपरताप करिमज्जनसरसमन रंजन पियाकेदृग अंजन भरतिहै॥ ताहीसमै दूतीदिखलायो आनिभ्रमर लिखि निपटउदास ह्वैउसासन भरति है। सारसबिलोचन बिचारिचितचेति राजहंसनके बंशकी सिपारसि करतिहै ३ परसप्रवीणताई प्रथमसमागममें प्यारीकी बिलोकि पियछोभ्यो तियलोनजानि। कहै कबितोषपति शोचमेटिबेकेकाज लिखनलगीसो चित्र आपनेसरोजपानि॥कुंभीलिख्यो सिंहनिजानितालिख्यो सिंहसुत आधोकढ़ि कुम्भनिबिदारयोनिज कुलवानि। समुझि स्वभाय चित चातुरो बिलोकि प्यारो अंकभ-

रिलीन्हो निजशंक मेटिमोदमानि४॥ अथमुग्धानायका॥दोहा॥ जोवन आगमकी उमग जाके अंगमेंहोय। मुग्धा तासों कहतहै कबिसबग्रंथ बिलोय॥ कबित॥ अंगन में नेक छबि जोवनकी सोहैलगी देखि मनमोहै लगी मोहन सुजानको। कहै गिरिधारी अबहींते याकी ऐसीदुति दिना दशही में रूप जितिहै जहान को॥ गिरिवर जीतेचले अंकुर उरोजनके भौहैं बंक जीतैचली बंक्कर कमानको। लोचनछबीलीके श्रवण परसनचलेंचलेत्यों छबीले केश छुवन छवानको १ सोड़िन अरुनाई अंग औपतिगोराई जंघयुगुल नितम्ब पीनताई पकरतिहै। कटि खीनताई लरिकाई लीनताई मुखचन्द्र में जोन्हाई ज्योति जाल बगरतिहै॥ भनत कबीन्द्र पेखि अंकुर उरोजनके पिय हिय प्रेमके खजाने से भरतिहै। कुवरी के तन तरुणाईकी अवाती पेखि सौतिन मन नाभिवाती से परतिहै २ बिसरन लागो बालपन को अयानप सखिन सों सयानपकी बतियां गढ़ै लगी। दृगलागे तिरछे चलन पगमंद लागे उरमें कछुक उससनि सी चढ़ै लगी॥ अंगनमें आई तरुणाईयोंझलकि लरिकाई अबदेहते हरेहरे कढ़ै लगी। होनलागी कटि अबछटिकै छलासीहैज चन्द्रकी कलासी तन दीपति बढ़ैलगी ३ मंदमंद चाललागी चलन गयंदगति चंदमुखी आनँद के कंद दरसातीहै। लागी कछु तनक तिरीछे करैं ईछनको मृदु मुसक्यान लागी शोभा सरसा ती है॥ भृकुटी कमान लागी कानबंशी तानलागी ता-

हीको वोनान लागी सुद्धि सरसातीहै। सखिन लजान लागी मोहै मन कान्हलागी हेरे जेहि ओर सोसुधासी बरसातीहै४॥ अथमध्या ॥ दोहा॥ जाके तनमेंलाज अरु काममबरोबरिहोय। मध्या तासों कहतहैं महा सु कबिसबकोय॥ कबित्त॥ उरज उतंगनको मनिनकोहार दीन्हो कंठै कंठश्री दीन्हें बाजू बंद बांहको। मंदमंद गतिसों गयंद गति जीतिलीन्हो सखिहून संग लीन्हो लीन्हो चित्त चाहको॥ लाजलाजवती कोबोलावै केलिमंदिर को नेह बरजोरीकै मिलावति है नाहको। धाराबश भावगत पूरबको चाहत है लीन्हे जात जैसे हठि केवट पछांहको १ रैन अंधियारी तैसी पावस की घटा कारी उठीअधीकारी झंझा पवनकि झमाकमै। कहैगिरिधारी मनमोहन मयंकमुखी सोवै परयंक रतिरंग की रमाकमै॥ प्यारो अंकभरै उर अंचल सकोलि करै केलिका कलोल कामतेजको तमाकमै। रह्योतमछाय गयो दीपक बुतायतहूं कामिनी लजायरहै दामिनी दमाकमै २ झालरनदार झुकि झूमत बितान बिछेगइब गलीचा अरु गुलगुली गिलमैं। जगर मगर पदमाकर सुदीपनकी फैलीजगाजोति केलिमंदिरअखिल मैं॥ आवत तहांई मनमोहनको लाजमैन जैसी कछुकरी तैसी दिलहीको दिलमैं। हेरि हेरि बिलमैं नलान्हो हिलमिलमै रही हैहाय मिलमैं प्रभाकी झिलमिलमैं ३ केशरि कनक कहां चम्पक बरनकहां दामिनी योदूरि जातदेहकी दमकते। कबिमतिराम लो-

ने लोचन लपटिजात अरुण कपोल काम तेजकी तमकते॥ पगकेधरत कल किंकिनि नेवर बजै बिछिया झमक उठै एकहीभमकते। नाह सुखचाहिचित श्रीचक हँसति चौंकि परै चंदमुखी निज चौकिकीचमकते ४॥ अथ प्रोढ़ा ॥दोहा ॥जो प्रबीन रतिरीति में कामकलान उदार। प्रौढ़ा तासों कहत है जाके पति अति प्यार॥ कबित्त॥ रमति निशंक मनमोहन मयंकमुखी अंकमेंरही जोबसि नवलकिशोरके। कहैगिरिधारीसारी रजनी ललासों मिलि कीन्हो केलि कला कामकौतुक करोरके॥ होत आवै यामिनी को अंत उठिजैहै कंत याते करै कामिनी चरित चितचोरके। दीपक पुरावै मुक्तावली दुरावै कलीकौलकी चोरावै यों भोरावै चिह्न भोर के १ चहचही चहल चहूधा चारुचन्द्रनकी चन्द्रक चुनीन चौक चौकन चढ़ीहै आब। कहै पदमाकर फराकत फरस बंद फहरि फुहारनकी फरस फबी है फाब॥ मोद मदमाती मनमोहन मिलै के काज साजि मणिमन्दिर मनोज कैसी माहताब। गोल गुलगादी गुलगिलमैं गुलाब गुल गजक गुलाबी गुलगिन्दुक गुले गुलाब २ रंगमगी सेजपर जगमगी शोभा चारु मणिनमय मन्दिर मयूखन अथाहकी। उदयनाथ तामें प्राणप्यारी और प्राणप्यारोलाल कोककी कलानि करत सराहकी॥ किंकिणी की नीकी धुनि नूपुरु ननाद सुनि सौतिन के बाढ़त बिषाद बादशाहकी। त्रिभुवन जीतिके उछाहकी ब-

ज़तिमानों नौबति रसीली मनमथ बादशाहकी ३ प्रीतमप्रभात अलसात आयेदोसभरेप्यारीकछु रोसभरे बचन उचास्योना। कहैगिरिधारी उठिआदर अदाव कियो बोली मृदुमंद मुसकाय मनमास्योना ॥ यद्यपि सुभावनसों मिली मनभावनसों नाहको गुनाह तियतद्यपि निवास्योना । माननीके जीकोमान जानिगो सुजान जब करत बिहार हार उरते उतास्योना ४ अथ नवोढ़ा ॥ दोहा ॥ मुग्धा जहंडरलाजसोंकर नरतिकीचाह। ताहिन वोढ़ानामकरि बरणात सबकबिनाह ॥ कबित्त ॥ बैठी बिधुबदनी क्षशोदरी दरीचीबीच खींचि पीन पांकपरयंक परलेगयो। भनैपजनेश भुजलपटि ललाके लगीछपटी सुनीबी कर जघन सभैगयो ॥ गोरीगोरो भोरीमुखसोहै रतिभीति प्रीतिरति क्षमरक रतिअंतसो रजैगयो। मानोपुखराजते फिरोजाभयो मानिकसोमानिकभयेते नीलमनिनगहोगयो १ दूसरीहबेलीमेंनबेली को अकेली लखि लाड़िली ललीजो भ्रिरमोर सखियानमें। कहैगिरिधारीलाल ललकि छबीलीबालगहि भुजमालसी लगाय कखियानमें ॥ परवशपरी प्यारी बरबस छूटोचहै उरमें गढ़ायनख नान्ही नखियानमें। भयेतन कंपित प्रसेदकन छायेउठे पुलक सुहाये आंसू आये अँखियानमें २ सुनिके समागमको कांपतमयंकमुखी रतिकीन चाहनेक थिरना रहतहै । दिननकी थोरीगोरी भोरी सब बातनमें नीबी कसिबांधी डोरी छोरी नाचहत है ॥ कहै मतिरामदिन डूबेप्राण डूबि

आवैं सामुहे बोलाय दौरि पांयन गहतहै। याही भ्रम माहीं पियागही आनिबाहीं हमनाहीं हमनाहीं परछा-हीं सों कहतहै ३ लाईकेलिमन्दिर भोरायभोरि भा-मिनीको फूलगंध कैफवास कीन्हीं पौनरुखते। कंचन कलित अतिकेशरिते रमनीय लोन्हीगहि पीतमप्रसून सेज सुखते॥ भनैपजनेश भुजभरत हहाकै हिये सीबीकै सिमिटिश्याम नीबीदाबि दुखते। आहि करि उछलि सचोट पन्नगीसी औंठिउमठि अरीरोमैंमरीरीकहि मुख ते ४॥ अर्थाबिपरीत॥ दो०॥ पतिपौढ़िऊपरत्रियाकरैबैठिरति रीत। आलिंगनचुंबनकरै ताहिकहतविपरीत॥ कवित्त॥ सिसकत सांसैभरै बीघेबाहु पांसैभरै सांसैभरै रसिक रसीली चित चोजकी। कहै पदमाकर सुदोऊ बिप-रीत माह महमही मड़ीमाजा मजुल मनोजकी॥ श्या-मरंग भीनी झीनी सबज कंचुकी सों फोरि निकसि रहीहै अनी युगलकिशोर की। मानो रूप सागर ते उन्नत अनोखी अब आनि कढ़ी काईफोरि कलिका सरोज की १ नथकी चलनि कटि किंकिनी कल-नि हिये हारकी हलनि उर उरज उतंग की। लंक की लचक परयंक की मचक इतउत की हचक रंग रचक सुसंग की॥ अंगन झलक हिये नेहकी छलक कबिरामजू ललक कोक मिथुन बिहंग की। झूमत झुमक बिपरीत की घुमक चुभी तियाकीहुमक कैधों झमक अनंग की २ रति बिपरीत में रमत अलबेली लखि कुंदनकी वेलि सो ससकिकै सकुचिजात। वेनी

कबि कहैंबिहसति बतरात बिज्जुछटासों छहरि घन-
श्याम तन जरिजात ॥ मोतिनकी लरैं अलकावलि के
तरेतसें उघरें जुरें यों मुखचंद देखि दुरिजात । मा-
थि मानो आगेडारि पाछे पांति तारनकी तमकी उ-
सातिमें उभरि लरि मुरिजात ३ प्यारे बिपरीत रति
करें प्यारे पीतमसों दुहुनके अंगन अनंग देखि हरषें ।
भनत कविन्द्रवेनी पीठही पै परी डोलैं पन्नगी सी वाह
हेम बल्लरी सो करषें ॥ नखरद खंडन चतुर नारि चु-
म्बन के सीवीकरें पीवें त्योंन सीवी नेम परषें । भाल
ते उचटि स्वेदकन परें कुचन पै इन्दुमनो ईशपै सुधा
के बुंद बरषें ४ ॥ अथ सुरतांत दोहा ॥ नेहभरे आलस भरे
सकुच भरे रतिरंग । ये नैना अध अधखुले जगे पगे
पतिसंग ॥ कबित्त ॥ जागी रतिरंग में रसीली अरसी-
ली बैठी सेजपै अकेली आजु आदरसधारिकै । वेनी
कबि बेनीकेखुलेहैं पेंच मेचक यों पेच पेच छाये मुख
मंडल बगारि कै ॥ ताहीमें अरुझ्यो सीशफूल सों अतूल
छबिऐसो सुरझायोलियो प्यारी कर कारिकै । बांधो
तमवंधन बिलोकि मानो दिनकर प्रात अरबिन्दन
छुड़ायो बंधु लरिकै १ प्यारी रतिरंग प्रात बैठीजीती
साफ जंगअंग सुभटनको इनाम बकसतिहै । आंगी दई
कुचन भुजनबाजू बन्द दये नूपुर पगन बेंदीभालसो लस-
ति है ॥ मोहनसो कबि नैन अंजन अधर बीरी जघन
दुकूल कानफूल सरसति है । पाछेपरे जानितानि मोह-
न कटाक्षन सों बारबार बंधन सों बारन कसति है २

उठी अलसात करिरति पतिसंग बाल होत परभातच-
लीआईयुतअंकहै ॥ लागीकाम मीरीछबि सोहत सुगंध
मई कुचनपै छतछूटी शीशलटें बंकहै । आलसबलित
गात जमुहात मीडैंदाग कंजसम हाथ मुखसोहत मयंक
है ॥ मानहुं कलानिधिको धौलकरिबे के हेत बारिज
का नातेमानि धोवत कलंक है ३ छूटिगये सिगरे
सिंगारहार टूटिगये तऊवोप उलहत मलगजी सारीते।
रदछद अधर कपोलनमें दानकरि नखछतछातीमें ल-
गेहैं जेबिहारीते ॥ अलकें बिथुरिरहीं झलकें प्रसेद
कन अधखुली खुलीरही पलकें खुमारीते। देह पेराई
छाई लोचन ललाई सबरातिकीजगाई आईउतरि अ-
टारीते ॥ ४॥ अथ ज्येष्ठा ॥ दोहा ॥ बरनत ज्येष्ठकनिकाहि
ज्यहि बिधि ब्याहीदार । करै एकपर प्यारअति दू-
जोपै घटिप्यार ॥ कबित ॥ दोऊ छबि छाजती छ-
बीली मिलि आसनपै जिनहिं बिलोकि रह्यो जात न
जितैंजितैं। कहै पदमाकर पिछोहै अति आदरसे छ-
लिया छबीलो कत बासर बितैंबितैं ॥ मूंदे हरि एक
अलबेलीके अनोखेदृग सदृग मिचाउनेकख्यालनहितैं
हितैं। नेसुक नवाय दृग धन्य धन्य दूसरीको औचक
अचक मुख चुम्बत चितैंचितैं ॥ १ ॥ पौढ़ी एक सेजमें
सलोनी मृगनैनी दोऊआनि नाहपीतम सुधासमूह बर-
सै । कबि मतिराम ढिगबैठो मनभावन दुहूनकोहिये में
अरबिन्द मोद सरसै ॥ आरसी दै एक को कह्यो कि
निज मुख लखो अरबिन्द बारिज बिलासबर दरसै।

दर्पण वारी जौलौं दर्पण देखै तौलौं प्यारे प्राणप्यारीके उरोज हरि परसै २ बैठी हुती आंगन में अंगना अनूपदोऊ उठीफाग खेलिबेको आवत बिहारी को। देखिनन्द नन्दको अनन्दभई दोऊइमि पेखत चकोरीजिमि चन्दकी उजारीको॥ कहै गिरिधारीतहां देखत दुहूंकोलाल डारि दीन्हो दृगन गुलाल सुकनारीको। जौ लौं वहकाढै अँखियानते अबीर तौलौं बलबोर परसे उरोज प्राणप्यारीको ३ दोऊ इकठौर जहां बैठीहै जलजमुखी प्यारो तहांआयो धीरताई ताकि नेहकी। नेह सरसाई निरसाई न छपाईछपै समताई सुलहकी कुहूक ज्योंमेहकी॥ भणत कबिन्द्र रंगभेदही में अंगद्युति सकैरंग देखिपरी दुहुनकी देहकी। पेरीसारी दैकैलाल सुक बहराई पहिराई लालसारी लालसारी जासों नेहकी ४॥ अथपरकीया॥दोहा॥ जोत्रिय करैछपायकै परप्रीतमसोंप्रीति। परकीयातासोंकहत जेजानतरसरीति॥ कबित्त॥ घातपरै कबहूं दुराय कहूं मिलिजात ऐसे दुरेडरेनेह कहांलौं निबाहिये। आंखिनको ओट चकचोहत चढ़ोईरहै आठौयाम श्यामसुख देखेचारु चाहिये॥ कहै गिरिधारी पानपानी मिसि छूजैगात पवनमिसिलोचनकीलाभौनितलहिये। जानत है जाननी जहान उपहासी सोहि वृन्दावन वासीकी खवासी ह्वैकै रहिये १ गोकुलके कुलके गलीके गोपगावनके जौलगि कछूको कछू भारतभानै नहीं। कहै पदमाकर परोस पिछवारन के द्वारन के दौरिगुण औ

गुणा गनैनहीं ॥ तौलौंचलि चातुर सहेलियाहि कोऊ कहुं नीकेके निचोरै ताहि करतभनै नहीं। हैंतोश्याम रंगमेंचोराई चितचोराचोरी बोरततो बोरयोपैंनिचोरत बनैनहीं २ चित्रलै चितेरी चुरिहेरिनि चुरियान लैके हारलिये मालिनि सुपासहूं खरीरहै। ज्ञावकलै नाइन गोसाँइन बिभूति लीन्हे सांझहू सकारेद्वार धो बिन अरीरहे ॥ गैयनके गोड़में गोड़ैयनकी भीरवड़ी सांवरे बिहारी जू सों धीरना धरीरहै। येरी यहिगांव बीच बसिबो हमारो नाहिं पतिब्रत पारिबेकी बिपति परीरहै ३ पथिक परोसिन न पाहीपतिआपनेको औरै उपपति के सनेहसों सनीरहै। ननँद निगोड़ीनित छोड़िपतिआपनेको परै पै अकंत परकंत सों धरीरहै। सासुओ जेठानी देवरानी की कहानी कहा चेरी औ चवाइन चवावसोंभरीरहै॥ येरीयहि गांव बीचबसिवो हमारो नाहिं पतिब्रत पारिबे की बिपति परी रहै ॥ ४ अथ ऊढ़ा ॥ दोहा ॥ ब्याही औरै पुरुष सों प्रीति और सों कीन। ऊढ़ा तासों कहतहैं सुकबि सुरस परबीन॥ प्यासल गहीलो गात पट चटकीलो पीलो छैल गरबीलो यहिद्वार ह्वै निकरिगो। टरिगो हमारो बीर धीरज हियेते आजु रूपकी झलाझलमें घूंघुट उघरिगो॥ मनचित कहैपतिब्रत की कहैको आली रूपको देवालो दृगद्वार ह्वै निकरिगो। सारीसराश्याम प्यास पूतरी नवसि गोरी हेरिबो हमारो सो हमारे गरे परिगो १ सूखी सरसीसी श्रम ब्याकुल बैठी है कहा

नजरि लगी है तृगा तोरितोरि नाख्यो में। बेनी क-वि भोरहीते बावरी सी घूमतहै लाज कछू काज गृह काज अभिलाख्यो में॥ ललकै हमारो जीव बोलो ना बिलोको काहे बेन आंखें मंदिरहीं तातेदीन भाख्यो में। पलकैं उघारौ क्यों न काढ़िजाय आंखिन ते गोर मतिकरै चित चोर मंदिराख्यो में २ उरझाइ दुकुल द्रु मन सुरझावै लागैं काढ़ै लागै कांटगहि कबहूंपगन सों। कबहूं नेवाज खुलेकेसन कसनलागै कबहूं गिरन लागै सुंदर अगनसों॥ ऐसेछलछंद कैकै ठाढ़ीह्वै रहत यों शकुंतला निपट भई व्याकुल लगनसों। सखिनकी नजरि बराय बराय नारि फेरि फेरि देखति महीपति दृगनसों ३ राजैरसमेरी तैसी बरषा समयरी चढ़ी चप-ला नचैरी चकचौंधा कौंधा बारैरी। छतीछतहारै हिय परत फुहारै कछुछोड़ै कछुधारै जलधर जलधारैरी॥ भगात कविन्द्र कुंजभवन पवन सौरभ सोकौनकीकृपा यकै परावोहाथ पारैरी। कामकेतु कासफूल डोलि डोलिडारैमन औरैकरि डारैंये कदम्बन की डारैरी४॥ अनूढ़ा नायका॥ दोहा॥ प्रीतिकरै कहुं मीतसोंजो अनब्या-हीबाम। ताहि अनूढ़ा कहतहैं जे कबिगुगा गगाग्राम कबित्त॥ ताही ठौर लाल कछु खेलतहैंख्याल जहांबाल कोगमन आगमन दिनरातिहै। जानत न सखीसखाल-खीलखा दुहुनकी लाजमयीनयों लगन सरसातिहै॥ उदयनाथ प्यारो इतै न्यारो गात बैठौ उतैंघात गहे प्यारी कछू न्यारी अठिलातिहै। ऐंचिकरअम्बर उरो

जउकसोहै करि भौंहके लगोहै तिरछो है तकिजाति है १ इतैराजिरही थोरी बैसकी किशोरी और इतै इनहूंकी बनी उमिरिकिशोरकी। कहैगिरिधारीकर तारकी सवारी चारुयुगयुगजोवै यह जोरी बरजोर का॥ दोऊमन कामना की गरजपूजिवे के काम करत गजानन सों अरज निहोरकी। राधिका बिहारी जूसों ब्याहकी लगन लागी लगन अगारीकीन ज्ञानीहुती औरकी २ लालन को पिंजरा निहारि कर लालन केबाल हाथ परैलै रुखाई भरे रितवै। भगात कविन्द्र नैनखंजन मचावै दोऊधावै फिरि आवै नेहजेरीभरैनि-तवै॥दोऊ मुसकात सोहै देखत सकात दोऊ जानत न घातकोऊ जात कितकितवै। सुरुखके सिसप्योसुरुख राखै वहीबाछुवाकी ओरचाहि बाछुवाकी ओरचित वै३जैसीलगी हुतीबालपानसे दुहूंकी प्रीतिजैसी बनी-हुतीजोरी एकहो मिशालहै। जैसा हुतामनमें मनोरथ दुहूंके अब तैसाकरि दीन्हा बिधि सुखद बिशाल है॥ माधवकहत राधा स्याम को बिवाह होतहैहों सुनि आईनन्दगेहयह हालहै। धोयगये सिगरे कलंक सुनि आईली बड़ीभई हैखुशाली भाग्यशाली नन्दलालहै ४

अथ॥गुप्तादोहा॥ रतिकरि करत दुराव जो गुप्ता कहत सुजान। बरणीतीनि प्रकारसन भूत भाब्य ब्रतमान॥

कबित्त॥ शंकपायलेनको गुलाबकीबढ़ीहै डारैबारीकी मझारी शीशहूंते अधिकाईहै। फूललेत करतेबिछुरि छतियांमें अटैछूटे छतियांते फटे बसन बनाईहै॥ खंडत

अधर भौंर जपाके कुसुम जानि कराठीकत होतगात जातछेद छाईहै। ननँद जेठानी ठकुरानीबनी बैठी रहै मोहिंको न देखिदेहि मोहींको पठाईहै १ पुहुपकी बा टिकामें गईती पुहुपलेन बानरकठिन एकदौरिकै लप टिगो। नखन बिदारी सारी फारीमेरी मलमल की कीन्ही मैंपुकारतब कुंजन झपटिगो॥ भगिकै मरिकै मैं इहांलौंआई शिवनाथ धरकतिहै छातीरंग मुखको कपटिगो। श्वासभरिआई पियराई मुखछाई दौरिगेह तकआई प्रस्वेद में चपटिगो २ आलीमैं गईहौं आजु भूलि बरसाने कहूं तापर तूपै पदमाकर तनैनी क्यों। ब्रजबनितावै बनितानपै रचैहैं फाग तिनमें जोऊधमिनि राधामृग नैनीयें॥ घोरिडारी केसरि सुबेसरिबिलोरि डारीबोरिडारीचूनरि चुचाति रंगनैनीज्यों। मोहिंझक झोरिडारीकंचुकी मरोरिडारी तोरिडारी कसनि बि थोरिडारी बेनीत्यों ३ सासुमोहिं त्रासदैपठायोहै प्रसून लेन कौतुक तहांको तोहिं सगरो सुनाइहौं। फाटेपट केवरेके कंटक अटकि काटे भौंरनके ठौरठौर रहीछत छाइहौं॥ कहै गिरिधारी कितै आइकै अकेली कहा आपने शरीरनकीसांसति कराइहौं। मेरीबीर बीरकी दोहाई भूलिआई आजु आजुते नगीचे याबगीचेके न आइहौं ४॥ अथवचनविदग्धा॥दोहा॥ कहतबिदग्धाभांतिद्वै जे कबिसुमतिसुजान। बचनबिदग्धा एकअरु क्रियाबिद ग्धाआन॥ कवित्त॥ आजुहौं कहांते उतनाहक नहानग- ई हानिभई तातेतहांमहाभय भीजिये। कहैगिरिधारी

बनमांझ होतआवै सांझ साथ ना सहेली हौं अकेली हाथमोंजिये ॥ मैयामोहिं मारीभैया भवनते निकारी पैयापरत कन्हैया मेरो कहोकाम कीजिये। भूलिकहूं कालिन्द्री के कूलमें हेरानो आयलाल मेरे छलाकोहेराय नेक दीजिये १ आजुदीपमालिकाको पूजनगईहे सबरैनि अँधियारीहौं अकेली कहा कीजिये। प्रेतऔ पिशाचनकी नारीडोलैं घरघर धरक करेजेहोत ताते भय भीजिये ॥ श्यामहिं सुनायकै कहतगोपी बारबार दीपक बुझानी मैंनताने सरछीजिये। जौलौं घरहाई आवैं मन्दिर लौं हाहा तौलौं आवरी परोसिन बलाय तेरी लीजिये २ आईहै निपट सांझ गैयागई बनमांझ ह्वांते दौरिआई मेरोकहो कान्ह कीजिये। मैंतोहौंअकेली औरदूसरोन देखियतबनकी अँध्यारीमें अधिक भय भीजिये ॥ कबि मतिराम मनमोहनसों पुनिपुनि राधिका कहत बात सांची ये पतीजिये। कबकी हौं हेरति न हेरेहरिपावतिहौं बछराहेरानोसो हेरायनेक दीजिये ३ औघट कलिन्द्री के कदम्बनके वृन्द जहां बिपुल बयारि हरिआवनेन पावती। कारेकारेपथिक सिहावन करारे भारे शोभा सूर कौरन जहां न कढि आवती ॥ कहत परोसिनसों बचन सुनाय श्यामै चातुरीसों आपनो मिलनदरशावती। ऐसेठौरगईगैयाघरमें न मैयादैयामैया मोहिं मारि मारिढूंढ़न पठावती४॥ अथ क्रियाबिदग्धा॥ दोहा ॥ करै बचन सों चातुरी बचन बिदग्धा होय। करैक्रियासों चातुरी क्रियाबिदग्धासोय॥ कबित॥

मंजुल निकुंजनमें मंजुल महलमध्य मोतिनकी झालरैं किनारिनमें कुरवृन्द। आयगेतहांई पदमाकर पिया-रे कान्ह आनि जुरिगये त्यों चवाइनके नीके वृन्द॥ बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठदै प्रवीनी दृगदृगनमिलै अनंद।आछेअवलोकिरहीआदरश मंदिर में इन्दीवर सुंदर गोबिंदको मुखारविन्द १ रात चांदनी मेंबैठी चांदनी बिछौनाकरि आसपास मंडलसहेलिनके वृन्दको। ताही समय आये तहां कुंजते सोहाये श्याम चारु चतुराईके पसारि फरफंद को। कहैगिरिधारी अति सुंदर तमाल छबि बालको दिखायो लालमंदिर अनंदको॥ सखिनभुराय यदुरायको उतरुदियो प्यारी नीलपटसों चोराय मुखचंदको २ बासरनबीतैं नैनाभरि भरि रीतैं प्यारी चढ़ै न अँटारीऔकढ़ै ना पाउँगेहते। भणत कबिन्द्र कैसेदेखै दुरिसांवरेको झांवरेबदनहोत देखेबिन देहते॥ खिरकी न दीन्हीताकी पियासुधि कीन्ही तिया अति परबीनी कीनी छलबल छेहते। कुंजी कुंज मंदिरकी परिहि देखाय राखै कुलुफडराय यदुरायके सनेहते ३ बाईजागिआई कबिराज छाती भरीआईपीरिपरिआईऔनिकसिआई पासुरी। सूखि केरकतगयो पाइयेरतीको कहूंजीको। परोशोररहोमां सोहैनमांसुरी॥ कौनयह पीरपावै काहूसोंनहींजनावै क्षणक्षण कछूकआवैहृंधतउसासुरी। आननकी ओट किये आननसोंबातेंकरै काननकी ओरकिये कानसुनै बांसुरी ४॥ अथलक्षिता॥दोहा॥ प्रीतिकरै जो मीतसों स-

खियांलखै लखाय। ताहि कहतहैं लक्षिता जेंप्रवीगा कबिराय॥ कबित्त॥ तेरेक्यों छपाये छपै छापेदार अं-गियामें अतर गुलाबीजो लगायो रंगबागको। रदछद ऊपर दरद गरहदयेरी रदक्रोरसके कौन लग्यो रद भागको॥ बातब निम्राई प्यारे भीजत बचाई प्रीति प्रकटी स्वहाई सुखपायेनेह लागको। लालकी कुसु-म्भी लालपाग दागवारी वहै सखीकहे देतहै किशोरी अनुरागको १ भूल्यो गृहकाज लोकलाजमन मोहनी को भूल्यो मनमोहनको मुरलीबजाइबो। अबही दिन द्वैमें रसखान बातफैलिजैहै सजनी कहांलों चंद्रहाथन दुराइबो॥ कालिहतो कलिन्द्री तीर चितयो अचान कहीदोउनको दोऊओर मुरिमुसकाइबो। दोऊपरें पैं-यादोऊ लेतहै बलैया उन्हैं भूलिगई गैया उन्हैं गाग-री उठाइबो २ अबहीं अकेलो कढ़ीआवत निकुंजनते आनँदसकेलि केल किये मनभायेते। कहैगिरिधारी जानीसगरी सयानी हम अंगअंग अच्छतन खच्छत न छायेते।नेह नन्दनन्दनको सूदेहूनमूदहोतछपत छपाक र न हाथनछपायेते॥ जुर्रातनडीठहै सुरति मुकराति कहासुरतितुरत कौन दुरति दुरायेते ३ मोसोंतूदुरावति है काहेको सयानी कोरतुरति की सुरतिनछपतछपा येते। कंचुकी कसनिटूटीनखछतछाजतहै ओठनमेंरद औपलक पीकलायेते॥ माधव कहत टूटेहार औअल कखुलीपलकनछाई अलसाईहैजगायेते। भरतउसासर ही नैननननवाय रही मनसकुचायरही लाजनलजायेते ४

अथकुलटा दोहा ॥ जोअनेक नायक चहै नायकसों है चैन। कुलटा तासों कहतहैं सजैरैनि दिनसैन ॥ कवित्त ॥ चंचल दृग अंचल चलावत चलत चाल अंचल उघारिकै हे वंचल सशीकरै। यौवनके मदरूपमद मत वारीभई घूमति भुकति युवाजनसों हसीकरै॥ कहै गिरिधारी वह कौतुक कह्योन जात कंकरीके लागत सिकोरी नाकसी करै। डोलति बजारन बजारन फिरति बाल हेरनमें जारन हजारन बशी करै १ छिनुक दुवारे छिन आवत ओसारेछिनचौवारे नैनसैनन सजतहै। और गहनेन के गहँक को गनावै जाकी आठहु पहर क्षुद्रघंटिका बजत है॥ उपपति मंडली के मंडल की मंडति सुरतिके चमंडनिते नेकुनाजरतिहै। मैनमदछाकीरीति दोयेकरिजाकी केती सासहू सजा कीपै कजाकी ना तर्जतिहै २ यौबन नवेली अलबेली रूपमानभरी हँसत गवेली गोप ग्वालन सों जायकै। एकन बुलावै एक सैनन चलावै एक नैनन रिझावैस-करहै उर लायकै॥ हेरत चलतअंग कोरन कटासकरि अंचल उघारि दीन्हीलट लटकायकै। बागबनगैल गैल जातना सखीहू संग लोकलाज डारि कुल कानि बिसरायकै ३ फेरत अनोट पीछे हेरत तिरीछे बाल गैलमें करत फैल छैलको दिखायकै॥ बात कहिबे के मिस सजनी कोढाढ़ी करै रजनी मिलाप को ठेकानो ठहरायकै॥ भनत कबींद्र सासुननँद के आगे ऐसीसूधी ह्वै रहत मानोरूधाहै उपायकै। नैननके डोरेबांधियो

बनके जोरे मनलेत है मरोरे कुचकोरे दरशायकै ४ अथ मुदिता॥ दो०॥ मुदितहोयजो देखिकै सुनिचित भावति बात। मुदितातासोंकहतहैं जेकबिमतिअवदात॥ कबित्त॥ तटबंशीबटके कलिन्दीके निकट मनमोहनीखबरिपाई नन्दकेनँदनकी। सांझसमययमुनामें दीपकप्रकाशनको शासन बधूकोदियो सासुयों सदनकी॥ कहैगिरिधारी सुनिबातइमि फूलेगात बरशान जातयह महिमामदन की। अँगिया दरकिगईछतिया फरकिगईतियाकीसरकिसरफूंदी अंगदनकी१सासुरेकी मालिनि अशीसकै स्वहागभागपहिरायो चैांसरचँबेलीकोउनतही। रावरे महल परोस कोस द्योसबीत्तै वाकेमोहिंफूलन चुनावति चुनतही॥ सुचित सकेतभों निकेतके निकटसर मानोसुख वृंदमन्द गुर्नमि गुनतही। माइकेकी बिरह की जरदी रहीकेमुख लालीचढ़ी बालके खुशालीके सुनतही २ वृन्दाबन बीथिन बिलोकि न गईहैजहां राजतरसालवन तालरु तमालको। कहैपदमाकर निहारतबनोईतहां नेहनको नेमप्रेम अदभुत ख्यालको॥ दूनोदूनो बाढ़त सुपनोकी निशामें अहोआनंद अनूपरूप काहू ब्रजबालको। कुंजते कहूंको सुनो कंतको गवन लखि आगमन तैसो मन हरन गोपालको ३ नाह परदेश ताके छिगजाइबेके काज साईत शोधाय शुभ पंडित बोलायकै। सुन्दर नक्षत्र बरयोगऔकरन तिथि चन्द्रजानि सामुहे सुमंगल सजायकै॥ माधवकहत चलीगेह ते कछुकदूरि आयमिलो कंतजो बिदेश रहो

छायकै। मनमें मुदित भई लौटिनिज धाम गई हियरे हरषिउर आनँद बढ़ायकै ४ अथअनुसयना ॥ दो० ॥ मिटो बिलोक केलिथल पियसों जहां मिलाप। अनुसयना तासों कहत होय हिये सन्ताप ॥ कवित्त ॥ गुंजत मधुप बैठ मालती लतान पर बेला की सुगंध बहै परस समीर की। डहडहीबेलीबन फैली फूलबरषत लहलहीलहरि वायमुनाके नीरकी ॥ सुमिरि सकेत कुंज नयनन प्रबाह बाढ़्यो सखी समुझावै नेक धरत न धीर की। आईहै बसंत ऋतु कोकिल कलापी पापी बोलत पपीहा कैधैं मैन उपचीर की १ सूने घर परम परोसी के सुजान तिय आई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति। कहै पदमाकर सु कंचन लतासी लचि ऊंची लेति सांस वा हियेमें त्यों नहीं समाति ॥ आय आय जहांतहां बैठि उठि जैसे तैसे दिनतो बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ पति उरआनी तऊ सेजपै बिलानी जाति २ आई ऋतु पावस अकाश आठो दिशन में सोहत स्वरूप जलधारन की भीरको। मतिराम सुकबि कदम्बन की बास युत सरस बढ़ावै रस परस समीर को ॥ भौन सों निकसि वृषभानकी कुमारी देख्यो ता समै सहेटको निकुंज गिरो तीरको। नागरि के नैननमें नीरको प्रबाह बढ़्यो देखत प्रबाह बढ़्यो यमुना के नीर को ३ भयो पतिझार पतिझार में उघरि गयो हतो जौन केलि कुंज कालिंदी किनारा में। कहै गिरिधारी ताहि

देखत विहाल भई बाल थहरानी मुकताहल ज्यों थारा में॥ छीटवारी कंचुकी कलित कुच कोरन में लोचन ते आंसू गिरे उपमा विचारा में। ओढे मेघ डम्बर बघम्बर अनूप मानो शम्भु के स्वरूप हैं नहात छिन्नधारा में ४॥ अथ गणिका॥ गणिका तासों कहतहैं जासों धन सोंप्रीति। नृत्य गीत रतिकी कलनि कलित कोककी रीति॥ कवित्त॥ पै जार जरी की इजार पैन्हे ओढे पटनायक हजारमें बजारमें स्वहाईहै। कहै गिरिधारी मृदुहसनविलासनसोंआसनसों कौनबसहोतरसकाईहै॥ रीझिरीझिदेदैधन धनीनिरधनीभये तहांजरजातिजहां सम्पतिसवाईहै। क्योंनयाके चलेआवैंकंचनउलीचोपा हिकंचनकचारिविधि कंचनीबनाईहै १ सोहनीललित देशी गूजरी सुघरबनी सारीसुवासारी जरीपूरबी किनारीहै। सिंदुरासीगमनबहारप्रीत अंगनमें सारंगसीकूकति विलोकि मेघवारीहै॥ पूरिआये नैननीर आनँदको सिंधुमानें देखि नटनागरीकी महाछबि भारी है। ईमन धरेहै हट निपट धनासिरीको लेनमाल वाकोतियापियापै सिधारीहै २ लाललाल पांयनमेंकौसें जरकसी लसीहैंासमाल लीबेको बहार जाके जीपैंहै। घेरदार पाइचेई जार कमखावतामें पैन्हि पीत कुरती रतीको रूप लीपैंहै॥ ग्वालकबि उरजउतंगनपै आंगी तंग ओढनी सुरंगझुकी आंखें सरसीपैंहै। सोनेकीसिरोसी बिजुरीसी निसरीसी वह चंदते चिरोसी दीसी बैठी कुरसी पैंहै ३ आरससों आरत सँभारत न शीश

पट गजब गुजारत गरीबनकी धारपर । कहै पद-माकर सुगंध सरसार वैसे बिथुरी बिराजैं बार हीरनके हारपर ॥ छाजत छबीले छितिछहरि छराकी छोर भोर उठिआई केलि मन्दिरके द्वारपर। एकपग भीतर सुएक देहरी पैधरै एककर कंजएककरहै किवाँरपर४

अथअन्यासम्भोगदु:खिता ॥ दो० ॥ आनतियातनपियाके रति केलसयालेषि। अन्यसुरतिसोंदु:खिताबरणतसुकबिबिसेषि ॥ कबित्त ॥ याही को पठाई बड़ाकाम करिआई बड़ीतेरीहै बड़ाईलखो लोचन लजीलेसो। सांचीक्यों न कहै कछुमोको किधैं आपहीको पाई बकसीसलाई बसन छबीलेसो ॥ मतिराम सुकबि संदेशा उनमा-नियतुतेरे नखशिख अंग हरष कटीलेसो । तूतोहै र-सीली रस बातन बनाय जानैं मेरेजान आईरस राखि कैं रसीलेसों १ बोलतन काहे येरी पूछेबिन बोलों कहा पूंछतहो काहेभई स्वेद अधिकाई है। कहै पद-माकर सो मारगके गये आये सांची कहमोसों आजु कहांगई आईहै ॥ गईआईहों तो पास सांवरे के कौन काज तेरेलिये ल्यावनसो तेरीये दोहाई है। काहेते न लाई फिर मोहन बिहारीजूको कैसे वाहि ल्याऊं जैसे वाको मनल्याईहै २ कमल बदन कुंभिलानो काहे श्रम बिंदु ग्रीषम दुपहरीतपन सरसाईहै ॥ पीतपट कैसोतेरे कंतबकसीस दीन्ही धीरेक्यों बचन मोहिं मोहनबका-ईहै। बारक्यों लगीरी तेरे प्रेमकी कहानी कही अ-रुन कपोल काहे केशरि लगाई है ॥ भूषणा अभंगका

हेदौरिकै संदेश लाई श्यामतनभाई आली आली दुख पाईहै ३ येरीदूती कहेमेरी औरते तू गईहुती मेरीयों न भई भई आपनेई काजकी। कहैगिरिधारीकृत करत दुराव नहीं दुरत दुराये द्युति सुरति समाज की॥ मेरे जान केलिकरिआईहै कन्हाईजूसों लाईहैहजारनकी मौजशिरताजकी। सारी जरकसी कसी अँगिया कि नारीदार बकसी बिशद बकसीस ब्रजराजकी ४॥ अथप्रेमगर्विता॥ दोहा॥ जोतियपियके प्रेमको जाहिर करै गुमान। प्रेम गर्बिता होयसो बरणतसुकबि सुजान॥ कबित्त॥ मेरेहँसे हँसतहै मेरे बोले बोलत है मोहींको जानत तनमन धन प्रानरी। कबि मतिराम भौंह टेढ़ी किहे हांसिहूं में छोड़िदेत बसन भुषण पानी पान री॥ मोते प्रानप्यारी केन औरकोऊ कहातोसोंरिस करि कातकहु कहाको सयानरी। मैन कामिनी के मैनकाहूके न रूपरीझै काहू के सिखायोसखि आनो मन मानरी १ जोहूमें कहत सोई करत प्रमान पिय वाकी डीठि मेरेसंग लागिसी फिरतिहै। मेरेहँसेहँसत उदासत्ते उदासहोत नेंकरूसिरहैा पानीपानना सोहात है॥ कौन गुनरीझै मैंनजानो कछूरसभाव कैधौं मेरे भागकी बड़ाई ठहरातहै। कुशलयों बार बार घूंघुट उघारि देखै चंद्रज्यों चकोरनको मन ललचात है २ मेरेहै रहत नित मोहींको चहत चित औरयेही तूनसों नहित हितवतिहै। कहै गिरिधारी अनरसहूमें रसहूमें केसहून तहँ रसरीति रितवतिहै॥ मेरी मुसक्यानचारु

चंद्रिकाको पानकरि आनँद बिनोदके बिलास बित वतिहै। छोड़त न रैनिदिन मेरेमुख चंद्रओार पीतम के चयन चकोर चितवतिहै ३ मेरोपति मेरे पी अधीन निशिदिन रहै मेरीओार देखिनित मन हरषतहै। मेरी प्रीति रीतिकी कहानीकहै लोगनसों मोहिंछाड़ि दूसरी न नायका चहतहै॥ माधव कहत मोसों कोककी कलानकरि मोद उपजावत रिझावत रहतहै। जैसी भागि मेरीतैसी औारकी न हेरीब्रज वनिताघनेरीभागि सालिनी कहतहै ४॥ अथरूपगर्विता॥ दोहा॥ आपुइअपने रूपकी जोतिय करै बखान। रूपगर्विता कहतहैंजाके रूप गुमान॥ कवित्त॥चंद अरबिंद बिम्ब बिद्रुम फणिन्द शुक कुंदन गयंद कुंदकली निदरति है। चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनश्याम कहा कुमकुमकोअंगराग अंगन करति है॥ कोकिल कपोत पिक पल्लव कलिंदीघन दरके निरखि दास्यो छतियां बरति है। मेरे इन अंगनकी नकल बनाई विधि नकल बिलोके मोहिं नकल परतिहै १ चंद्रमुख अधर निरखि हीरा दंतनको सोपहि निदरिसोन मुकता प्रकासेहै। बारन से बार चक अरुझक कंजखंज शुकआदि नासिकाते रहत उदासेहै॥ मेरेसब अंगनकी समता न पाई तासों कहै परसाद सबै दुखके प्रकासे हैं। कोऊ नभवासी कोऊ भयेथलवासी जायकोऊ बनवासी कोऊ जल में निवासेहैं २ बैठीहुती जाय दुरि दीपन में आयो तहां जाहितू कहो करति बीर हलधरको। भागीहैं डेराय

करि भवन अंधेरेलखि निपट छवानकान्ह आनिगहो करको॥ दोपति हमारी या हमारे साथकीन्हो छल दीन्हो जो बताय यहभेव घरघरको। दौरि दुरिबे के काज दीपक बुझायो सेतौ गाहक भयोरी येरीआप नेई गरको ३ उत्तर घनेरे करिरहौ रुख फेरे तिहूं घन श्यामघेरे घरघरिहू घरीरहै। कहैगिरिधारी सुंदरहौ मुखचंद चारु तापर चकोरनकी चार्चार खरीरहै॥ गातनमें कबहूं सुवासना लगाईतहूं आसपास अलिन कीअवलिअरीरहै। रैनिदिन अंगनकी दीपतिदिपति नेक छिपति छिपायेते न बिपति परीरहै ४॥ प्रथमान वतो। दोहा॥ करैईरषा दोयसें जोनायकसोमान। मान वतीतासें कहतजेकबि सुमति सुजान॥ कबित्त॥ मेखी ह्वै रहीहै सो वृषभ गतितेरी आली मिथुनके काज को बिलम्ब कहाकीजिये। करक मिटाउ आछे सिंह के चरनधाउ कन्याके सुभाउसो बिशेषितजिदीजिये॥ तुलातौअतुलरूप वृश्चिककोबिषछाड़ि घनघनश्याम जूके चरन गहीजिये। मकर न कीजै आछे कुम्भ के गुननह्वैके मीनमन मगनहोके प्रेमरस पीजिये१तौलों हैांनबोली जौलों चातक मयूर बोलै मानके मरोरनैन कोरहन खोलीमैं। खूबिरही खूबी खुसबोयकी लहर दार शीतल समीर डोलै तनक न डोली मैं॥ कहत नेवाज मैनमन में उमगि आयो फूलिउठे उरजउतंगयुग चोलीमैं। कूकिउठी कोयल कसायनकहूंते श्याम देखि घनश्याम घनश्याम तोसें बोलीमैं २ येरीगोप-

जायातूसोहै न गोपजाया गोपजातिक्योंछिपाया गोप जातिकीजै भंगना। हूजै गोपजाति क्यों न हूजै गोप जातिक्यों न हूजै गोपजाति गोपजाति लीन्हे संगना॥ मेटेगोप जाति तनभेटे गोपजाति उरफेटे गोपजातिधन सिंह यामें ढंगना। नोखीतू अनंगना जू चाहैदेवअंगना सो टाढ़ोतेरे अंगनापै तेरे सकौअंगना ३ आयोहैसयान पन गयो न अयानतऊ नितउठि मान करिबेकी टेउ पकरी। घरघर मानदीय मानतीमनायेतेवै तेरी ऐसी रीति सोतो काहूमें न जकरी॥ कबिमतिराम श्याम रूप घनश्यामलाल तेरेनैनकोरओर चाहै यकटकरी। हहाकै निहोरैहून मानती हरीननैनी काहेको करतहठ हरिलकी लकरी४॥अथपुरुषबियोग ॥ कबित्त॥गाइहैं मलारैं औजनाइहैं हियेमेंछकि छाइहैंछिगनीकुंज कुंजहीके कोरेमैं। कहैपदमाकर पियाइहैं पिआलामुख मुखसो मिलाय हैं सुगन्ध के भकोरेमैं॥ नेह सरसाइहैंसि-खाइहैं जोसावनमें पायहैं परीसों सुखमैनके मरोरेमैं। उरउरभायहैं हियेसों हियलाइहैं भुलायहैं कबैधैां प्राणप्यारीको हिंडोरेमैं १ राधेकी रहनि सुनिदहनि दहीहै देह नेहकैसे निरद नयन नीर बरसत। सांवरी सी मूरतिमैं कांवरीसी परिगई तांवरीसी आय तहां श्रमबूंद बरसत॥ श्वासन ते बाड़बकी ज्वालसी जरन लागी झरपि झरपिभूमि दांवरीसी भरसत। आंखैं खोलिबोलिकह्यो ऊधोजू तिहारीसोंह मेरोब्रजचलि-बेको अंगअंग तरसत २ गायबे बजायबेकी चरचा

चलावै कौन छोटेछोटे छोहरन खेलबो बिसरिगो। सबपुरवासी गहे रहत उदासी खोजहांसीको सबनके मुखनसें हेरायगो॥ सबहीके मुखकोदेवैया महिपाल सो शकुंतलाके शोचके समुद्रमें समायगो। नारि औ पुरुषमिलि सबही बिसारयोसुख सगरे नगरमेंनिगोड़ो दुख छायगो ३ कुंजघनी घनसे निकसि दामिनीसी बाम कुटिलकटाक्षनसों रीतोतनकैगई। मेरेहिय भूमि प्रेम सलिल समोयकरि इन्दीवरनैनी बीज बिरहकेबै गई॥ सुधि बुधिगई तनबिषसें बगरिगयो दुखन की मोट शिरपर मेरेदैगई। जानत नकोहै कौनकीहैकहा नाम वाको डारिकै ठगोरी मन मेरो हरिलैगई ४॥ अथ पुरुषमान॥ कबित्त॥ नंदलाल जादिन सों रोस करिगये मोसें तादिनसें होसकरि आवैयहिटोलैना। कहैगिरि-धारी कबें कुंजकी गलीमेंजाय मुरली बजाय गीत गावत अमोलै ना॥ येठोई अटानसें अरेठाई रहत आली करत सनेहकी कलानको कलोलैना। रहैअन बोलै भेदमनको न खोलै महामान भरो डोलै हाय मोसें हँसि बोलैना १ मानकरि बैठे बनमाली बिन काज आज ऐसीकछू चूक सखीमोपैतौ परीनहीं। कोटिन उपाय करि बिनती अनेकभांति राति सबगई मेरी एकतौ सुनीनहीं॥ माधव कहत कौन करिये उपाय आली दीजिये बताय अबएक तौ चलीनहीं। पैंयां परों बीरमैं बलैयालेबो तेरीचलो लाइये मनाय मनधीरतें धरैनहीं २ अबला अधीर बुधि कहाजानै

रसभाव तुमसौ सुजान ऐसोमान धरियतुहै। ऐसोबोल
बोलो जैसो बोलियतु बलिजाउखेदेकहूं पक्षिनकेपाछे
परियतुहै॥ कीजै सनमान अरु खैयेपान प्रानप्यारे
विना जलयान कैसे सिंधुतरियतुहे। जाकेलिये मोसो
हाहा करिकै परतपाँय तासों हरि अनरसकी बात
करियतुहे ३ खेलत हँसत पतिपतिनी सुसेजपर अति
रसबस भये आपसमें बाढ़िकै। बातहीके मध्यकछु
बाल अपमान कीन्हो लालरिसिवाय करवटलीन्ही
डाढ़िकै॥ प्यारी परबीन तबऐसी चतुराईकरी छाती
सों लगाय पीठिकसी अतिगाढ़िकै। श्रीफल सुफल
बिंबि तोंबरीके भायकुच पियहिय रिसकी कसक
लीन्ही काढ़िकै४॥ अथदानबर्णन॥कबित्त॥ सम्पतिसुमेरुकी
कुबेरकी जोपावै ताहि तुरत लुटावत बिलम्ब उरधा
रैना। कहै पदमाकरसो हेसहै हस्तिनके हलकाहजा
रनके बितरबिचारैना॥ गंज गजबकस महीपरघुनाथ
रावबाहीगज धोखेकहूं याहूंदैडारैना। ताहीतेगिरिजा
गजाननको गोयरही गिरितेगरेतेनिजगोदतेउतारैना १
कछुदिन बीते अब बासर रहैगोबना चकही बियोग
के बियाद नारखतहै। रहैगो संयोग रोज रोज यहि
भांतिन सों छपीछप जैहै छिनछिन परखतहै॥ राजन
के राज महाराज श्रीटिकैतराय करनसे जाकेहेम
धारबरखतहै। बारोसुरसाखीदानरीतिदेखिजाकी मेरु
रहैगो न बाकी चक्रवाकोहरखतहै २ काशीसोंनबास
रामदूतसों न दास कालत्रासंसों न त्रास नसुपंथ संतसा-

थसें। हंससों न छान हंस बंशसें न बंशआन अन्नसें न दान हालहुकुमी न हाथसें॥ सिंहसें न रनी श्रीकुबेर सें न धनीशैल मेरुसों दुनीहै न उत्तमाङ्ग माथसों। पानीगंगपाथसों न ज्ञानी गौरिनाथसों न मानी दशमाथसों न दानी बिश्वनाथसों ३ बकसि बितुराड दीन्हे भ्रुराडनके भ्रुराडनृप मुराडनकी मालय त्यों दईहै त्रिपुरारीको। ग्रामदीन्हे धामदीन्हे उदक अरामदीन्हे थोड़श न दानजगातीके जीवधारीको॥ कहैपद्माकर करोरिनके कोशदीन्हे भीतिन भरोशदीन्हे ऐसा उपकारीको। राजाजैसिंहने दईनादोयबातें एक शत्रुनको पीठि और दीठि परनारीको ४॥ अथयशवर्णनम्॥ कवित्त॥ कैरवसों कुन्दसों कपूरसों कलानिधिसों कागदसों काससों कपाससों निहारीहै। फाविरही फटिकसों फेनुसें फोहारासम उज्ज्वल तुषारासम तारासम तारीहै॥ हीरा हर गिरहंस हारसा चमेलीसम चांदीसम चटक चहूंधा चारुभारीहै। मोतीसम क्षीरसम बीरराजा रामचन्द्र फैली महिमराडलमें कीरति तिहारीहै १ घोरे सेत सेत जोरे रथसो हुगंध सोहै ध्वजा फहरात ज्यों प्रवाह गंगपाथको। बिमल कलानिधिसों बैठो अवलोकिभयो बिसमै कहातो पातरपनके साथको॥ पूछो अज वेश तुमकोहो कितजैहो उन टेरिके सुनायो बड़ो बचन सनाथको। क्षीरधितें आवत छपाकरके पासजात हौंतो मैं सुयशबीर बाबूबिश्वनाथको २ पूजाकी समय में एक कौतुक लखेउँ जुआज सुनो जैसिंह सब सुखन

को हेतहै। शुचिसों सुचित्त ह्वैकै पूज्यो ब्रजराजै
प्रभुदेख्यो पक्षिराजै चलि जैबेको निकेतहैं ॥ ताहीस-
मय रावरेको सुयश सुनायो कहूं भयो प्रयासतन सेत
बसन समेतहै। झझकि झझकि ताहि देखि देखि
हालय देखो गरुड़ गोपालय आजु चढ़न न देतहैं ३
इन्द्रन ज्यों हेरत फिरत गज इन्द्र अरु इन्द्रको दनुज
हेरै दिगप नदीशको। भूषण भनत सुरसरिता को हंस
हेरै बिधिहेरै हंसको चकोर रजनीशको ॥ साहितनै
सरजायों करनी करीहैजामें होतहै अचंभो कोटि
देवयो तेतीसको। पावत न हेरेतेरे यशमें हेराने निज
गिरिकोंगिरीशढ़ूंढै गिरिजागिरीशको४॥अथसूमबर्णनम्
कबित्त ॥ दर्दरी देखतके दिलको दरद हरै देबेकोहज़ार
लोग लाखनको टारोतो। गर्जीबदारै सरदारै दारैसों-
पिदेतो दुगुन करै को सकै ब्याजते बिचारोतो ॥ सु-
कबि सुबंश कहै सूमकहै सूमिनसों आजुबड़ो स्वप्नमें
कलंक उरधारो तो। आगिसी लगीथीभागिहतीबाल
बच्चनकी जागि ना परोतो मैं रुपैया देयडारो तो १
बांधेहारकाकरी चतुरचित्त काकरी सो उमरिवृथा
करी न रामकी कथाकरी। पापकी पिनाकरी न जानै
नाक नाकरी सोहारिल की नाकरी निरंतहीननाक-
री ॥ ऐसी सूमता करी नकोऊ समताकरीसो बेनीक-
बिताकरी प्रकाशता सुताकरी।देवअर्चा करी न ज्ञान
चर्चाकरी न दीनपै दयाकरी न बापकी गयाकरी २
जाकीहै अधेलो चारिपावलो दुवन्नीआठ तामेंपुनिदे-

खे आना सोरह लखातहै। बत्तिस अधन्नी जाकीचैां-
सठ पवन्नी ताकी एकसैं अठाइस जामें धेला सरसात
है॥ इकरा बिचारो हैसैंछप्पन सुदेशायेजू पांचसैं सु-
बाराजामें दमरी लखातहै। सबते कठिनहै या बापते
पियारो भैया रूपेको रुपैया दैया कापै दयोजातहै ३
पढ़नन देतहै कबित्त बाजे भावन जू बाजे चुपचाप
सुनि नींबसी अचै रहै॥ बाजे दशबीस गूढ़ पूंछि दि
ष्ट कूटकन मूढ़शठ साखिन के चरचा मचै रहै। बाजे
अफ सोसकरैं बाजे रहिबोसभरैं बाजेदे भरोस दरबार
में नचैरहै। बाजेसूम सूकादेत पाथर लगाय छाती बाजे
सूमसाहेब सुपारियों पचैरहै ४॥ अथकृपाण बर्णनम् ॥ ह
रिचक्र बेली शिवशूलकी सहेली कैधैं कैधैं अलबे-
ली है नवेली महाकाल की। कैधैं बलदेवके मुशल
कीहै मौसी कैधैं माताहै प्रचण्ड कालदण्ड बिक-
रालकी॥ भृगुके कुठारते कठेठो उतनेही कैधैं बिषकी
बहिन कैधैंकैधैं बज्रबालकी। हरदृग ज्वाल प्रलय-
कालकी करालकैधैंकैधैंकरवाल रामचंद्र महिपाल
की १ रन बनभूमैंतौ भुजलतिकापै चढ़ी कढ़ीम्यान
बामीते बिषम बिषभरीहै। जारिपुकोडसैं सोतौ तजैं
प्राण ताहीक्षण गाडुलो अनेक हारे झारे नाहिं झरी
हैं॥ भनत कबिंद्रराव बुद्ध अनिरुद्ध तनै युद्धबीच या
को एक तोहीं बसिकरीहैं। तरल तिहारी तरवारप-
न्नगीको कहूंतंत्रहै न मंत्रहै न यन्त्रहै नजरीहै २ कौला
कालकूटकी तचाईतेजबाड़वकी शेषफूंक धवनिप्र-

चराडताइ चढ़ीहै ॥ आईआसमानते कि पाई सानभा
समान प्रलयकी बुझाई पानीपैंनधारकढ़ीहै। हरिहर
हरके त्रिशूल हरिचक्रहू ते बैरीबंश बधिबेको भलीबि
धिपढ़ीहै॥ अबदुल वाहदके नबीखां तिहारीतेग बज्र
के हथौरा काल कारीगर गढ़ीहै ३ दाहन ते दूनीतेग
तिगुनी त्रिशूलहूते चिर्रिन ते चौगुन चलांक चक्रचा
ली ते। कहैपदमाकर महीप रघुनाथ राव ऐसी शम
शेरशेर शत्रुन पैघालीते॥ पांचगुनी पविते पचीसगु-
नी पावकते प्रबल पचास गुनी प्रलय पर नालीते।
शतगुनी सांपनसहस गुनी आपनते लाखगुनी कालते
करोरि गुनी कालीते ४॥ अथमरस्या ॥ खसिगयेशा-
न की निशान बैसवारे बीच आजुरथ बेधि सुरलोक
की पथैगयो । कहै शिवलाल समुझावै कौन बानी
कहि दूनों महरानिनको जनम वृथैगयो॥ बाबूहरी
सिंहतें सिधारे देवलोक तेहिशोक सुखभागिकै पुरा
नकी कथैगयो॥ भक्षिलयो कालहिज गैयन को रक्ष
पाल भैयन को कलबन भानुसों अथैगयो १ सुकबिच
कोरन कोचंद्रमा हेरान्योकै सिरान्योभानु सुकृतसरो
जनके खानको॥ खसिपस्यो साधुनकी सीमकोसदन
कैधौंसागर सुखान्यो सुखशीलता सुधानको। भनतक
बींद्र भूपखींची भगिवंत जूभयो बैरबांधिबूझै कोतली
का तुरकानको॥ खूटिगयो खगान के ख्यालकोअ
खारो कैधों उखस्यो अक्षैवट अखिल हिंदुवान को २
समुद सुखान्यो कैधों संतजन मीनन को दीननको देव

नी नरनाहकी सुहाईहै॥ विरचयो विचारिग्रंथ संग्रह करीहै एक माधवप्रसाद पद सरलमें गाईहै। लेखक सहायता दईहै शिवरतनलाल दुबे बंशजाये मनलाये शिवपाईहै १॥

दो० यंत्रालयमुद्रितकियो जगमेंमहतप्रचार।
होतभयोयाग्रंथको शिवकोकृपाउदार १

इतिश्रीमाधवविलास समाप्तः॥

मुंशीनवलकिशोरके छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
अक्टूबर सन् १८८८ ई०



तुलसीशब्दार्थप्रकाश ॥

गोपालदासजी रचित जिसमें सर्वपुराणों और षट्शास्त्रोंके मतसे सर्व प्रकारके गूढ़ाशयोंका कथन और जातक ताजकसामुद्रिककी मुख्यबातें गणित,योग,शास्त्र और बिवाह और यात्रादिके मुहूर्त और इसी प्रकार के असंख्य बिषयहैं जो पुस्तकके पढ़नेसे जानेजाते हैं ॥

प्रेमरत्न ॥

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादीरत्नकुँवरि रचितकेवल श्री-कृष्ण और रामचन्द्रजी की भक्तिपचका विषय दोहा चौपाईमें है ॥

चित्रचन्द्रिका ॥

काशीराजकवि रचित जिसमें पहले अनेक छन्दोंमें नायकाभेद वर्णन करके फिर उनको चित्रबद्धकरके रूप दिखायाहै ॥

पीयूषलहरी ॥

पण्डित जगन्नाथजी त्रिशूली कृत-अति मनोहर और पुण्यदायक काव्यमें श्रीगंगाजीकी स्तुति है ॥

गङ्गालहरी ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें संस्कृत गंगालहरी से गंगास्तुतिके बिषय में जिनसे मनुष्य भवसागर पार उतरे अपूर्व कविताहै ॥

यमुनालहरी ॥

ग्वालकविरचित जिसमें काव्यालंकारयुक्त यमुनाजीकी स्तुति है

जगद्विनोद ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें नायकाभेदमें सर्व प्रकारके रसवर्णन किये गयेहैं ऐसीउत्तम सर्व लक्षणयुक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहींहै ॥

भारतीभूषण ॥

पण्डित गिरिधरदासरचित छन्दोंके बनाने और नायकाभेद जानने की युक्ति ॥

रसचन्द्रोदय, व रसवृष्टि ॥

उदय नाथ जी व शिवनाथ रचित इसमें सबप्रकारों के नायकाओं का भेद और उनके सर्व प्रकारके अलंकार रचित हैं छापाटैप ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्यगीता शास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य-विनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीतावज्-वत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे शास्त्रवेता अपनीबुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यह प्रत्यक्षहीहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकल कलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी, आई, ई ने बहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्यआख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह बिचारहुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थको भाष्य में अधिकतरउत्तमता उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाके साथ और इस ग्रन्थ के टीकाकारों की टीकाभी जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक और श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहितइस पुस्तक में उपस्थित है॥